ओ३म्

पथिक भजन संग्रह

(भाग २)

पं. सत्यपाल पथिक

ओ३म्

"पथिक" भजन संग्रह

(भाग-2)

(आर्यसमाज के उच्च कोटी के भजनोपेदशक जिन्होंने देश विदेश में जींवन भर आर्यसमाज का प्रचार किया। के द्वारा रचित)

रचयिता :

पं० सत्यपाल "पथिक"

७० ए, गोकुल नगर, मजीठा रोड़

अमृतसर-१४३००१

फोन : ०१८३-२४२६७२६

आर्य प्रकाशन

८१४, कूण्डे वालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६

भूमिका

आपके अनुरोध पर

आर्य समाज के बन्धुओं, माताओं, बहिनों ने मेरे द्वारा लिखित भजनों के प्रति इतना स्नेह दिया है कि उनका धन्यवाद प्रकाश करने को मेरा शब्द भण्डार अत्यन्त संक्षिप्त जान पड़ता है। सोचता हूँ क्या करूँ। वह शब्दावली कहां से लाऊं। बस हृदय तन्त्री की तार तार से कृतज्ञता सलिल का अजस्र स्रोत अविरल धारा बन कर अहर्निश प्रवाहित होता रहता है।

पर्याप्त समय से आर्यजनों का यह अनुरोध था कि "पथिक भजन माला" के सभी पुष्पों को संगृहीत कर देना चाहिए जिससे एक साथ ही आर्यजन सारे भजनों को प्राप्त कर सकें। आर्य प्रकाशन, दिल्ली के अधिष्ठाता श्री तिलक राज जी कोहली ने मेरी सभी रचनाओं को संगृहीत कर के तीन भागों में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। सभी भजन दो भागों तथा महर्षि दयानन्द जीवन गाथा को तीसरे भाग में छापने की योजना बनाई। अतः "पथिक भजन संग्रह" (प्रथम भाग) गतवर्ष १९९५ ई० में प्रकाशित कर दिया था जिसमें "पथिक भजन माला" के प्रथम चार भाग छापे गये। अब "पथिक भजन माला" के छठा, सातवां, आठवां, नौवां तथा दसवां इन पांच भागों को एक पुस्तक में छापा गया है। यह "पथिक भजन संग्रह" दूसरा भाग है।यही इस समय आपके हाथों में है।

इस संग्रह में भी अनेक विषयों पर भजन आपको मिलेंगे। जो भजन प्रथम संग्रह में आ चुके हैं उनमें से कोई भजन इस संग्रह में नहीं आया है। इस दूसरे संग्रह में जिन विषयों पर भजन आपको मिलेंगे उनमें से मुख्य-मुख्य ये हैं यथा–

गुरु विरजानन्द, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, पं० लेखराम, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, श्री राम, श्री कृष्ण, आर्य समाज, प्रभु भक्ति, वेद, गायत्री, यज्ञ, यज्ञोपवीत, स्वाध्याय, सत्यार्थ प्रकाश, दान, धर्म, पुण्य, अष्टांग योग, चरैवेति, टंकारा, मूल शंकर तथा माता, काशी शास्त्रार्थ, पर्व महिमा, जन्मदिन, मंगल अवसर, सात मातायें, पांच महायज्ञ, पांच सकार, बच्चों के लिए देश प्यार, राष्ट्रीय पहेलियां, राष्ट्रीय ध्वज, पाठशाला, अतिथि स्वागत, पुरुषार्थ, तथा अण्डा, मांस, शराब, जुआ आदि बुराईयों से बचने की प्रेरणा के भजन दिये गये है। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई विषयों पर भजन हैं। आगे तीसरी पुस्तक "महर्षि दयानन्द जीवन गाथा" छापने की योजना है।

एक निवेदन यह है कि मेरी प्रत्येक भजन पुस्तक में हिन्दी तथा पंजाबी दोनों भाषाओं में भजन होते हैं। उसका कारण यह है कि शायद इस समय पंजाबी भाषा में वैदिक सिद्धान्तों पर भजन लिखने वाले गिनती के कुछ ही विद्वान हैं। अतः मैं सोचता हूं कि पंजाबी भाषी लोग भी अधिक से अधिक वैदिक सिद्धान्तों से परिचित हो सकें इस दिशा में मेरी सेवायें भी प्राप्त होनी चाहिएं। अतः हिन्दी एवं पंजाबी दोनों भाषाओं के भजन स्वीकार कीज़िए।

अन्य नये-नये भजनों की पुस्तकें भी समय समय पर आपको भेंट करता रहूं यही इच्छा है। प्रभु कृपा करे।

विदुषामनुचरः

सत्यपाल "पथिक"
७० ए, गोकुल नगर,
मजीठा रोड, अमृतसर– १४३००१
फोन : ०१८३–२७०१२६

भजन सूची

बेड़ा पार न होगा

तर्ज़– इस रेशमी पाज़ेब की झंकार के सदके।

संसार में जिसका प्रभु से प्यार न होगा।
उसका तो भव सागर से बेड़ा पार न होगा।
संसार में जिसका..........

सुबह और शाम जो उसके खुले दर पर न आएगा।
न मन में प्रेम लाएगा न मस्तक ही झुकाएगा।
ईश्वर के वरदानों का वह हकदार न होगा।
संसार में जिसका..........

प्रभु तो हर समय खुशियां ज़माने पर लुटाता है।
मगर जो जाग जाता है वही तो लूट पाता है।
सोए का तो सपने में भी उद्धार न होगा।
संसार में जिसका..........

प्रभु हर एक प्राणी को सदा देता ही देता है।
वह अपने दान के बदले कभी कुछ भी न लेता है।
दुनियां भर में ऐसा कहीं दरबार न होगा।
संसार में जिसका..........

वह दुनियां से निराला है "पथिक" तू जान ले इतना।
वह शक्ति सबसे ऊँची है अगर तू मान ले इतना।
तुझको उसकी भक्ति से फिर इनकार न होगा।
संसार में जिसका..........

परदा हटा ते सडई

तर्ज़– वे मैं दिल तेरे कदमां च रखेया तू पैर उत्ते पा ते सई

हर दिल विच हर दम वस्सदा एह दिल ते बिठा ते सई।
प्रभु अपने दा कर लै दीदार तूं परदा हटा ते सई।
रब्ब तैनूं दित्तियां बिल्लौर जहियां अखियां।
जान बुझ के तूं आपे बन्द कर रखियां।
ओ- ऐना तेरे नैनां विच नूर हैं।
ओ-फेर वी नज़ारा तैथों दूर है।
तेरा ई कसूर है, तूं पलकां उठा ते सई।
प्रभु अपने दा कर लै दीदार...........
पक्कियां अटारियां चों नस गयों बन्देया।
चिक्कड़ाँ च आन के तूं फस गयों बन्देया।
ओ-मिलने दा चारा बन्दे छोड़ नहीं,
ओ-ओहदे कोल मेहरां दी वी थोड़ नहीं।
होर कुछ लोड़ नहीं, तूं हथ पकड़ा ते सई।
प्रभु अपने दा कर लै दीदार...........
होवे न गुज़ारा दिलदार बिना दिल दा।
लभेयां बग़ैर दिलदार नहियों मिल दा।
ओ-जे न सच्चे साथी नूँ मनाएंगा,
ओ-सारियां बहारां तूं गवाएंगा।
फ़ेर कीह बनाएंगा, "पथिक" समझा ते सई।
प्रभु अपने दा कर लै दीदार...........

खेवट

तर्ज़– नी कर्मां वालिए नी भागां वालिए

तूं खेवट बन के आया एह डुबदा देश बचाया।
टंकारे वालेया ओ वेदां वालेया– तूं खेवट.......

छड सुख सारे तूं नस आया।
भारत मां दा दर्द मिटाया।
तेरे वरगा मां दा जाया।
कोई होर न एथे आया। टंकारे वालेया........

तरसन अखियां होंठ प्यासे।
हौके हांवां चारे पासे।
तूँ आयों देन दिलासे।
वरतावन सब नूँ हासे। टंकारे वालेया........

मां वागुं ठण्डियां तेरियां छांवां।
कर दित्तियां सब दूर बलांवां।
तेरे तों बलिहारी जांवां।
मैं जिन्दड़ी घोल घुमांवां। टंकारे वालेया..........

जी करदा ए मस्त बहारां।
"पथिक" तेरे कदमां तों वारां।
तेरे पर उपकार हज़ारां।
मेरे दिल दियां खड़कन तारां। टंकारे वालेया.....

विश्व का आधार

तर्ज़– हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिए।

नाथ तू ही एक सारे विश्व का आधार है।
चल रहा तेरे इशारे पर सकल संसार है।

चाँद सूरज और सितारे तेरी महिमा गा रहे,
तेरी शक्ति का कहीं कोई न पारावार है।

भर दिया अनगिनत रत्नों से समन्दर का हृदय,
और पृथ्वी का ख़जाना भी अनन्त अपार है।

सब के सब प्राणी बराबर हैं तुम्हारे सामने,
तू ही जड़ चेतन का रक्षक तू ही पालनहार है।

वेद वाणी से ज़माने को सुसज्जित कर दिया,
सत्य विद्याओं का जो सीमा रहित भंडार है।

इक हमें नर तन दिया उस पर हज़ारों नेमतें,
क्या कहें कितना बड़ा हम पर तेरा उपकार है।

आ रहे कितने 'पथिक' दुनियां में जीने के लिए,
है सफल जीवन उसी का जिसका तुमसे प्यार है।

दिल में रहता है

तर्ज़– मैं तेरे दर पे आया हूं कुछ कर के जाऊंगा।

वह सब के दिल में रहता है दिल में ही पाओगे।
गर बाहर जाओगे तो धोखा खाओगे। वह सबके.....
सृष्टि को बनाता है और खुद ही चलाता है।
दुनियां का रक्षक है सब का वह दाता है।
उसकी यह माया है कण-कण में समाया है।
यह सब अपने दिल को तुम कब समझाओगे।
वह सब के दिल में रहता है.........
तीर्थ पर जाने में मल-मल के नहाने में।
फल फूल चढ़ाने में ख़ुद को भटकाने में।
कुछ भी न हाथ लगा और जीवन बीत गया।
तब तलियां मल-मल के रोते रह जाओगे।
वह सब के दिल में रहता है..........
जितने भी प्राणी हैं सबका मन-मन्दिर है।
ईश्वर हर प्राणी के मन्दिर के अन्दर है।
इन की जो सेवा है फल मीठा मेवा हैं।
अनजान 'पथिक' समझो वरना पछताओगे।
वह सब के दिल में रहता है.........

तेरे कारण

तर्ज़– दमा दम मस्त कलन्दर

ओ देव दयानन्द देख लिया तेरे कारण
जन जन को, हम सबको मिला है यह नवजीवन।
तुझे है सौ सौ वन्दन करें तेरा अभिनन्दन। ओ देव......

1. हुआ अज्ञानता का दूर अन्धेरा।
घर घर ज्ञान के दीप जले तेरे कारण। जन जन.......

2. झाड़ झंखाड़ तूने जड़ से उखाड़ा।
बगिया में नये नये फूल खिले तेरे कारण। जन जन......

3. फटे हुए थे यहां दिलों के दामन।
प्यार की सुई से वे सब हैं सिले तेरे कारण। जन जन.....

4. बहुत भाईयों से भाई छिन चुके थे।
सदियों बाद फिर आन मिले तेरे कारण। जन जन......

5. ग़ैर की धमकियों से दबने वाले।
ख़तम हुए हैं सब वे सिलसिले तेरे कारण। जन जन....

6. हम इक फूंक से ही उड़ जाते थे।
'पथिक' तूफ़ान से भी अब न हिले तेरे कारण। जन जन.

ओ देव दयानन्द देख लिया तेरे कारण

भगवान के आगे

तर्ज़– इस रेशमी पाज़ेब की झंकार के सदके

जिस आदमी का सर झुके भगवान के आगे।
सारी दुनियां झुकती है उस इनसान के आगे।
जिस आदमी का सर............

खुले आकाश में उड़तीं पतंगें साथ में डोरी।
मगर क्या डर उसे जिसकी प्रभु के हाथ में डोरी।
ताकत फीकी पड़ती है उस बलवान के आगे।
जिस आदमी का सर............

बड़े से भी बड़ा संकट उसे फिसला नहीं सकता।
मुसीबत के दिनों में वह कभी घबरा नहीं सकता।
उसको ठहरा पाओगे हर तूफ़ान के आगे।
जिस आदमी का सर............

बसे वह देवता बनकर ज़माने के ख़यालों में।
उसी के नाम का चर्चा अन्धेरों में उजालों में।
सूरज भी क्या चमकेगा उसकी शान के आगे।
जिस आदमी का सर............

वह सारे इम्तिहानों में हमेशा पास होता है।
'पथिक' जीवन की राहों में कभी न उदास होता है।
मन्ज़िल खुद आ जाती है उस महमान के आगे।
जिस आदमी का सर............

आर्य समाज

तर्ज़– मैं हूं गंवार मुझे सब से है प्यार।

जग में जिए सबके लिए देव दयानन्द का यह आर्य समाज।
दुनियां कहे करता रहे आर्य समाज सारी दुनियां पे राज।
जग में जिए सब..........

धारण जब से नाम किया, पल भी नहीं आराम किया।
सबकी नज़र हैरान हुई, जीवन में वह काम किया।
धरती पे जिसकी मिसाल नहीं आज।
जग में जिए सब..........

तूफ़ानों से लड़ता रहे। चीर के सागर बढ़ता रहे।
सह न सके अन्याय कभी, जुल्म के आगे अड़ता रहे।
बन्धा रहे सर पे सफलता का ताज।
जग में जिए सब..........

फ़र्ज़ में दिन और रात है क्या। सांझ है क्या परभात है क्या।
पर उपकार की राहों में, इस जीवन की बात है क्या।
प्यारी इसे जान से वतन की है लाज।
जग में जिए सब..........

दुखियों का ग़मख़ार है। यह देश का पहरेदार है यह।
भारत के दुश्मन के लिए दो धारी तलवार है यह।
करता है "पथिक" यह सबका इलाज।
जग में जिए सब..........

ऋषि आ गया

तर्ज़– बेशक मन्दिर मसजिद तोड़ो बुल्लेशाह यह कहता है।

बालुकण वर्षा की बूंदें ये आकाश के तारे।
उपकार दयानन्द ऋषि के लोगो गिन सकता न कोई सारे।
घर घर में थी फिरी जहालत सबके दिल पर वही छा गया।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया..........
वह ऋषि आ गया जी, वह ऋषि आ गया जी।
हां वह ऋषि आ गया जी, आ गया ऋषि आ गया।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया..........
वैदिक धर्म तजा दुनियां ने और मज़हब लाख बनाए।
आर्य जाति पड़ी सदियों से मुरदा कौम कहाए।
तभी जान में जान आ गई ऐसा बढ़िया गीत गा गया।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया..........
भारत वर्ष गुलामी वाला कब से था बोझ उठाए।
आगे बढ़कर उस योगी ने बन्धन तोड़ गिराए।
और सामने जो भी आया नतमस्तक होकर चला गया।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया..........
कितनी बार घने संकट के बादल थे घिर घिर आए।
टंकारा के ब्रह्मचारी ने मार के फूंक उड़ाए।
लगे कांपने सभी विरोधी 'पथिक' ज़माना डगमगा गया।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया..........

प्रभु दा नां

तर्ज़– रखड़ी बन लै वे बन्न लै मेरे

जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु
दुखां दियां मारां तों बच सकें
कुल दुनियां दे मालिक बाझों कोई न ते
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा

जिन्दे तैनूं वड्डेयां बुजुर्गां कईयां ने सम
इक वारी नहीं सौ सौ वारी तोते वांग प
जिन्नां तैनूं उतांह उठाया ओनी गईयों
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा ना

खोल के अखियां ज्ञान वालियां उठके वेख नज़
दिल दे बागीं पींघां पा लै लै लै नाम हुल
छेती छेती कर पिपलां दी मुड़ नहीं लभनी छ
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां...

मिट्टी विच जद लाल गवाचा पएगा फिर पछतौना
पई मारदी फिरीं टटोले कख नज़र नहीं औना
फिर जू वाटे बैठ कहवेंगी हुण किधर नूं जां
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां......

खेड गवाया बचपन सारा ऐशां विच जवानी।
आखिर पल्ले पया बुढ़ापा मुक्की जाण कहानी।
'पथिक' सिर ते सट्ट पवे ते चेते आवे मां।
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां......

जवानों से

तर्ज़— स्वयं बनाईये

गर देश में बड़ती रहीं यों ही नादानियां।
किस काम आयेंगी कहो फिर ये जवानियां।
किस काम आयेंगी कहो............

आलस में पड़े सो रहे तुम को ख़बर नहीं।
घर लूटने वालों को फ़िर किसी का डर नहीं।
दिन रात बहुत हो रहीं भारत की हानियां।
किस काम आयेंगी कहो............

सोचो ज़रा दिमाग़ से हिम्मत से काम लो।
गिरती है दशा देश की बढ़कर के थाम लो।
मिटती हैं बुज़ुर्गों के पांओं की निशानियां।
किस काम आयेंगी कहो............

योद्धाओं और शहीदों का इतिहास बिन पढ़े।
ज़िन्दों पे कभी ज़िन्दगी का रंग न चढ़े।
पढ़ते रहे नावल तथा किस्से कहानियां।
किस काम आयेंगी कहो............

मौका सुनहरी हाथ से गर यों ही खो दिया।
यौवन के इस जहाज़ को खुद ही डुबो दिया।
होंगी न 'पथिक' वक्त की फिर मेहरबानियां।
किस काम आयेंगी कहो............

बंदेया बेख़बरा

तर्ज़– ओ जट्टा जाग ज़रा तेरी शेरां वरगी शान

ओ बन्देया बेख़बरा दिन चढ़ आया तूं जाग।
एह अखियां खोल ज़रा उठ नींदर नूं हुण त्याग।
बीती काली रात ग़मा दी होया दूर हनेरा।
पूरब दे असमानां उत्ते उगेया आन सवेरा।
थां थां चिड़ियां चैहकन लगियां बोलन लग पए काग–बंदेया
मिट्ठी मस्त हवा ने अपना सुन्दर साज़ वजाया।
रल मिल पत्तेयां खड़खड़ करके पूरा ताल मिलाया।
कुदरत रानी ने है छोया नवीं सुबह दा राग–बंदेया
धरती उत्ते चानन होया गगनीं छुप गए तारे।
अपनी अपनी हरकत दे विच आईयां कूटां चारे।
आया हथ सुनैहरी मौका जागे तेरे भाग–बंदेया
तेरी चिट्टी चादर उत्ते लगा दाग़ पुराना।
साबुन ला के धो लै इस नूं मुड़ न पवे पछताना।
धोतेयां बाझों चादर नालों नहीं लथना एह दाग–बंदेया
बेफ़िकरी विच सुत्तेयां ऐनी लम्बी रात गुज़ारी।
सोना चांदी हीरे मोती पूंजी लुट गई सारी।
हुण एह समय वी डस न जाए बनके ज़हरी नाग–बंदेया
रुत सुहानी खुशियां वंडदी तैनूं वाजां मारे।
छेती उठ के झोली भर लै दित्ते खोल भण्डारे।
फेर 'पथिक' चलके कीह लैना उजड़ गया जद बाग–बंदेया

जीत-हार

तर्ज़– अजब हैरान हूं भगवन् तुझे क्यों कर रिझाऊं मैं।

कहीं पर जीत होती है कहीं पर हार होती है।
यही है ज़िन्दगी प्यारे जो दिन दो चार होती है।
जो पेड़ों को लगाते हैं सभी तो फल नहीं खाते,
यहां प्रारब्ध भी कोई चीज़ आख़िरकार होती है।
किसी भी काम में जब तक न हो मरज़ी विधाता की,
बड़ी कोशिश करे कोई मगर बेकार होती है।
कभी खिलवाड़ फूलों से कभी आकाश से बातें,
कभी तूफ़ान में नैया पड़ी मंझधार होती है।
यह बचपन ही सहारा है जवानी और बुढ़ापे का,
अजी यह नींव है जिस पर खड़ी दीवार होती है।
यह जीवन एक नदिया है तो सुख दुख दो किनारे हैं,
ये दोनों साथ रहते हैं जहां जलधार होती है।
यह दौलत नाव ही समझो जो आती और जाती है,
कभी इस पार होती है कभी उस पार होती है।
"पथिक" मंज़िल पे सब पहुंचें कोई आगे कोई पीछे,
कि हर इनसान की जग में अलग रफ़तार होती है।

दुनियां-बीमारी-मुसीबत

तर्ज़– मेरे महबूब शायद आज हैं नाराज़............

डरे बलवान से दुनियां जो निर्बल को डराती है।
अमीरों को सराहती है ग़रीबों को सताती है।
हवा तो एक होती है मगर दो काम हैं उसके,
बढ़ावे आग जंगल की दीया लेकिन बुझाती है।

सुना है इस ज़माने में बीमारी की यह आदत है,
जिसे कमज़ोर पाती है उसे ही आ दबाती है।
जहां संयम का पहरा हो वहां पल भर नहीं रुकती।
जहां अड्डा हो व्यसनों का वहीं पे घर बनाती है।

न तो कोई बुलाता है न आने की ख़बर देवे,
मगर जब आना होता है मुसीबत आ ही जाती है।
मुसीबत जब भी आती है अकेले ही नहीं आती,
हज़ारों आंधियां तूफ़ान अपने साथ लाती है।

यहां पर बेसहारों को सहारा कौन देता है,
'पथिक' यह बेरहम दुनियां तो गिरतों को गिराती है।

वीर बलिदानी

तर्ज़– तेरे चेहरे से नज़र नहीं हटती नज़ारे हम क्या देखें।

स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
बैठी दिलां विच तेरी कुर्बानी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी........

मिले जां बरेली विच ऋषि दयानन्द सी।
मिट गईयां शंकां सब मुंह होया बंद सी।
आई सोचां ते विचारां च रवानी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी........

जंगलां उजाड़ां विच गुरुकुल खोल के।
शिक्षा गवाची होई लभ लई टटोल के।
आंदी मोड़ के तूं सभ्यता पुरानी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी........

सच दियां राहवां उत्ते पैर तूं वधाया सी।
गोलियां दे अग्गे सीना तान के वखाया सी।
मोटे अखरां च लिखी ए कहानी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी........

मज़हबी दीवाना इक गोलियां चला गया।
"पथिक" शहीदां विच नां तेरा आ गया।
वारी देश उत्तों सारी ज़िन्दगानी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी........

धीरज

तर्ज़– स्वयं बनाईये

मूरख मन धीरज मत खोए।
सहज पके सो मीठा होए।
व्याकुलता तज क्यों नहीं सोए।
सहज पके सो मीठा होए।

माली बीज तो पहले बोता।
फल मौसम आने पर होता।
बिन मतलब का बोझा ढोए।
सहज पके सो मीठा होए।

बूंद-बूंद से घट भरता है।
लेकिन वक्त लगा करता है।
यह सच है तो फिर क्यो रोए।
सहज पके सो मीठा होए।

नर मेहनत हर दम करता जा।
आलस को तज श्रम करता जा।
परिश्रम जल सबके मल धोए।
सहज पके सो मीठा होए।

निज पथ पर तुम न घबराना।
पग-पग अविचल बढ़ते जाना।
'पथिक' असफल रहा नहीं कोए।
सहज पके सो मीठा होए।

सब का पालनहार

तर्ज़– नेकी तेरे साथ चलेगी बाबा

सब का पालनहार तू ही है दाता।
प्राणों का आधार तू ही है दाता।
दुःख दुखियों का हरने वाला।
ख़ाली झोली भरने वाला।
सब का पालनहार तू.......

तन के बिना उत्पन्न किए हैं कितने पदार्थ सृष्टि में।
तेरे बराबर और न कोई इस दुनियां की दृष्टि में।
सब से बढ़कर सब से न्यारा।
सब से ऊंचा सब से प्यारा।
सब का पालनहार तू..................

कुछ भी कहीं तुमसे न छुपा है घट घट अन्तर्यामी है।
सुदृढ़ सुन्दर न्याय तुम्हारा कोई न इसमें ख़ामी है।
ईश्वर तेरी अद्भुत माया।
किसी ने तेरा अन्त न पाया।
सब का पालनहार तू ....

जिसने तुझे दिल में न बसाया क्या जग में सुख पाएगा।
नियत समय जब निकल गया तो फिर पीछे पछताएगा।
छाया चारों ओर अन्धेरा।
'पथिक' भरोसा सबको तेरा।
सब का पालनहार तू..................

अमलां ते नबेड़े

तर्ज़–जे तू नाम न जपेंगी जीभा मेरिए।

तेरे अमलां ते होणगे नबेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।
जदों जावनगे बखिए उधेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।

हिन्दु मुसलमान सिख, ईसाई संसार विच।
सब दा स्वरूप इक्को मोतियां दे हार विच।
फ़ेर काहनूँ पाना एं बखेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं

दिल च वसाके प्रभु बन्देयाँ नूँ प्यार कर।
कदी न किसे दे उत्ते नफ़रत दे वार कर।
मुक्कनगे फ़ेर सब झेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।

जेहड़ा सच ग्रहण कर झूठ सदा त्यागदा ए।
दुखियां दी सेवा विच दिनें रातीं जागदा ए।
हुन्दा ए परमात्मा दे नेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।

जिन्हां परमात्मा दी भगती विसार छड्डी।
झूठ पाप ज़ुल्म विच ज़िन्दगी गुज़ार छड्डी।
खाणगे चौरासियां दे गेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।

अन्त वेले मुक्ति दे दर ओहो जांवदा ए।
नेकियां कमांवदा ते प्रभु गुण गांवदा ए।
भगती दे तार जिन्हें छेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।

'पथिक' बनाया प्रभु खेवनहार जिन्हां।
प्रभु दे हवाले कर दित्ती पतवार जिन्हां।
ओहनां दे पार होने बेड़े ते ज़ात किसे पुछणी नहीं।

हम हैं तुम्हारे

तर्ज़–तेरी जवानी तपता महीना..........

दुनियां के मालिक ख़ालिक हमारे। हम हैं तुम्हारे।
हम बेसहारों को दे दो सहारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनियां के मालिक.......

तेरे सिवा जग में दीनों का बन्धु कोई नहीं है।
तुम हो प्रभु हम को प्राणों से प्यारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनियां के मालिक......

सुना है ज़माने में जिस पर तुम्हारी नज़रे करम हो,
लगती है जा के वह कश्ती किनारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनियां के मालिक......

जाएं कहां पे हम सूझे न कोई दूजा ठिकाना,
हम आ गए दाता अब तेरे द्वारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनियां के मालिक......

आशा है छोटी सी विनती हमारी प्रभु पूरी होगी,
"पथिक" खड़े दर पे झोला पसारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनियां के मालिक......

अपने आप पे ऐहसान

तर्ज़–तोहफ़ा कबूल कीजिए सरकार आपका

खुद आप अपने आप पे ऐहसान कर सकूँ।
जो देव दयानन्द की पहचान कर सकूँ।
हर बार यही बात ही आती है ज़िहन में,
जीवन में किसी बात पे अभिमान कर सकूँ।
न ज़बान में ही दिल है न दिल की ज़बान है,
फिर सिफ़त तेरी किस तरह बयान कर सकूँ।
मुश्किल बड़ी है बात यही सोचता हूं मैं,
कैसे दो शब्द पेश मैं अनजान कर सकूँ।
इच्छा है मन में एक ही पूरी प्रभु करे,
मैं आख़री दम तक ऋषि गुणगान कर सकूँ।
दुनियां को उसके गीत सुनाता हूँ इसलिए,
शायद किसी ग़रीब का कल्याण कर सकूँ।
ऋषिराज मेरे घर में तो कोई वो शै नहीं,
जिसको न तेरी राह पे कुर्बान कर सकूँ।
सोचा है 'पथिक' ज़िन्दगी तुझ पे ही वार दूं,
ताकि मैं काम कोई तो महान कर सकूँ।

गंगा राम जमना दास

तर्ज़–(स्वयं बनाईए)

बोलो ऐसे आदमियों पर कौन करे विश्वास।
जो गंगा गए तो गंगाराम जमना गए तो जमनादास।
बोलो ऐसे आदमियों पर......................
जहां से निकले मतलब इनका वहीं पे डेरा डालें।
जग वाले न समझ सकें इनकी सतरंगी चालें।
ऐसे कायर ही करते हैं कौम का सत्यानास।
जो गंगा गए तो गंगाराम जमना..........
जिधर हवा ने रुख़ फ़ेरा मुंह उधर इन्होंने फेरे।
गिरगिट जैसे रंग बदलते रहते शाम सवेरे।
मन की दृढ़ता जैसी कोई चीज़ न इनके पास।
जो गंगा गए तो गंगाराम जमना..........
कभी न जिनको रुकते देखा किसी ज़बर के आगे।
बनी जो सर पे भीड़ ज़रा सी पीठ दिखा कर भागे।
अमृतसर से दौड़े सीधे जा पहुंचे मद्रास।
जो गंगा गए तो गंगाराम जमना......
वह जिन को अपने ही ऊपर नही भरोसा होता।
छोड़ के अपनी मर्यादा को करते हैं समझोता।
"पथिक" जला दो इन के भय को डाल के सूखी घास।
जो गंगा गए तो गंगाराम जमना......

टंकारे दा चन्न

तर्ज़ :- चिट्ठी विचों मां बोलदी छालां मारदा लड़ाई विच जावीं

टंकारे विच चन्न चढ़ेया सारी दुनियां ते चानन होया।
कि स्वामी दयानन्द आ गया चन्न बदलां च मुखड़ा लुकोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया ....

इट्टां रोड़े सुट्टे हूंज के जो सी पंडेयां पुजारियां खिलारे।
पुट्टियां विदेशी झाड़ियां बन्ने मज़हबां दे ढा दित्ते सारे।
कि पधरा मैदान हो गया रहया टिब्बा ते न कोई टोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया ....

पीसदे सी जदों देश नूं गोरी चमड़ी ते हैट वाले बाबू।
धौन तों गुलामी फड़ लई कीता फिरदियां जहालतां नूं काबू।
ते पैरां नाल भार बन्न के डूँहगे सागरां च सुट्ट के डुबोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया......

एकता दी सुई ढूंढ के धागा लै के वैदिक धर्म वाला।
कट्ठे कीते मोती खिलरे गुन्दी आर्य समाज रूपी माला।
कि मोतियां दे भाग जाग पए ऐने प्यार नाल उसने पिरोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया......

लाया खुद हथीं अपनीं इक वृक्ष बड़ा ही सुहावां।
देवे जो "पथिक" सब नूं मिट्ठे फल ते संघनियां छांवां।
ज़माने विच अज फैलेया जेहड़ा बीज सी बम्बई विच बोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया ....

भैड़ी फुट्ट नूं

तर्ज़ :- (आप बनाईए)

उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ, अस्सी नब्बे पूरा सौ।
देह वीरां नूं हस्सन खेडन फुट्टे नी जाह मगरों लौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भबा भा ....

इक तें भैड़ी सूरत तेरी, फिरनी एं तूं वांग हनेरी।
सड़ जान तेरे पैर होणिएं किते निचिल्ली हो के बौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ.....

जिथे मरज़ी पैर पसारें, थां कुथां न ज़रा विचारें।
आसे पासे कुझ न कुझ ते सोच लया कर करके गौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ.....

तेरे कर के पैन पुआड़े, फड़दे सक्के वीर कुहाड़े।
दिलां च भांबड़ बाल बाल के हथ तेरे की औंदा ए कौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ.....

फिर भी जे तूं ज़ोर लगाणैं, अपना आप ज़रूर वखाणैं।
जा फिर जंगल बेले अंदर रुखां दे नाल जा के खौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ.....

वेख अजे वी आखे लग जा, भली लोक बन एथों वग जा।
नहीं ते मेथों बुरा न कोई ग़रक जाणिएं रखीं थौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ.....

"पथिक' जे हुण वी बाज़ न आई, मुड़ के अपनी शक्ल वखाई।
चण्ड मार के दन्द तोड़ दऊं परां चड़ेले बैठी रौह।
उक्कड़ दुक्कड़ भंबा भौ.....

तलाश

तर्ज़-तुझे क्या सुनाऊं ऐ दिलरुबा....

तुझे मनवा जिसकी तलाश है, अति निकट उसका निवास है।
काहे दर बदर तू भटक रहा वह तुम्हारे दिल के ही पास है।
तुझे मनवा जिसकी तलाश ....

यह जो मनुज तन धन प्राण है, यह प्रभु मिलन का सामान है।
तेरी हर ख़ुशी तेरे घर में है फिर किस लिए तू उदास है।
तुझे मनवा जिसकी तलाश ....

दो घूंट भी जल न पिया, इनसान तूने यह क्या किया।
कब से नदी तट पर खड़ा अब तक बुझी नहीं प्यास है।
तुझे मनवा जिसकी तलाश ....

जब से तू राहों पे चल रहा, तेरा हर यतन निश्फल रहा।
मथनी तो जल में चला रहा और घी निकलने की आस है।
तुझे मनवा जिसकी तलाश ....

गुल टूट कर खिलता नहीं, नर तन भी फिर मिलता नहीं।
तू वीरान कर न "पथिक" इसे मिला मख़मली जो लिबास है।
तुझे मनवा जिसकी तलाश...............

मूल शंकर ते माता

तर्ज़–सड़के सड़के जांदिए मुटियारे नी कण्डा चुभा तेरे पैर

बैठां ऐ ओहले आन पया क्यों सोचीं वे,
दिल दी गल सुना करां मैं दूर बलांवां। वे बच्चेया–
घर नहीं लगदा जी मेरा दिल करे पया,
बन के साधु मैं चला जंगलां नूं जांवां। अम्बड़िए–
सदके जावे मां तेरी वे पुत लाडलेया,
छड्ड के जांवीं न वे मैं तेरी ख़ैर मनांवां। वे बच्चेया–
सच्चे शिव दे दर्शन नूँ दिल तरस रहया,
घोर तपस्या नाल मैं उस दे दर्शन पांवां। अम्बड़िए–
तेरे दम नाल जी रही तेरी अम्बड़ी वे,
नज़रीं आवें न ते मैं कमली हो जांवां। वे बच्चेया–
मां शंकर दी घलेया सी पुत जंगला नूँ,
मैंनु वी तूं टोर मैं तेरे पैर दबांवां। अम्बड़िए–
रीझां सधरां नाल करां तेरी मंगनी वे,
खुशियां चावां नाल मैं तेरा व्याह रचांवां। वे बच्चेया–
रहना सारी उमर बाल ब्रह्मचारी मैं,
बन संन्यासी जां मैं दर दर अलख जगांवां। अम्बड़िए–

बन विच ख़ौरे खान लई कुझ मिले कि नां,
नां जा मैथों दूर मैं चूरी आप खवांवां। वे बच्चेया–
हैन बथेरे कंद मूल विच जंगलां दे,
भुख लगे ते मैं बड़े चांवां नाल खांवां। अम्बड़िए...
तपे जेठ ते हाड़ महीना गरमी दा,
छावें बैठन लई लभेंगा केहड़ियां थांवां। वे बच्चेया.
संघने संघने रुख उगा के धरती ते,
थां थां रखियां ने प्रभु ने सुन्दर छांवां। अम्बड़िए–
आए पोह ते माघ महीने सरदी दे,
चलनगियां दिन रात ठंडियां तेज़ हवांवां। वे बच्चेया–
कट्टन दे लई सरदी विच पहाड़ां दे,
निघियां निघियां गरम अनेकां हैन गुफ़ांवां। अम्बड़िए–
बन विच फिरदे शेर बघेले हाथी वे,
रक्षा तेरी कौन करेगा बाझ भरांवां। वे बच्चेया
परमेश्वर जो रक्षक सारी दुनियां दा,
हर दम मेरे नाल ते फिर मैं क्यों घबरांवां। अम्बड़िए–
कोमल तेरे पैर मेरेया बच्चेया वे,
कंडेयां नाल भरपूर ने जंगलां दियां राहवां। वे बच्चेया–

फुल्लां तों वध नरम समझ के कण्डेयां नूं,
मन्ज़िल दे वल मैं खुशी नाल पैर वधांवां। अम्बड़िए–
पुत्तर दिल दी धड़कन चानन अखियां दा,
करां नज़र तों दूर किवें दिल नूँ समझांवां वे बच्चेया–
धर्म दी ख़ातिर हसके जानां वारन नूं,
हथीं अपनी टोरदियां पुत्तरां नू मांवां। अम्बड़िए–
जे तूं मैंनूँ छड गयों टुर जंगलां नूँ,
मैं जी सकना नहीं "पथिक" मैं सच सुनांवां। वे बच्चेया–
जद तक सूरज चन्न रैहणगे दुनियां ते,
रहेगा तेरा नां मैं ऐसा कर्म कमांवां। अम्बड़िए–

हमारा आर्य समाज

तर्ज़ :- (जै गोबिन्द जै गोपाल) संकीर्तन

देश का सेवक आर्य समाज। धर्म का रक्षक आर्य समाज।
मार्ग दर्शक आर्य समाज। आनन्द वर्धक आर्य समाज।
चुनता है काँटेआर्य समाज। अमृत बांटे आर्य समाज।
काटे जहालत आर्य समाज। हरे ज़लालत आर्य समाज।
जन हितकारी आर्य समाज। पर उपकारीआर्य समाज।
सत्याचारी आर्य समाज। प्रेम पुजारी आर्य समाज।
स्कूल चलावे आर्य समाज। विद्या पढ़ावे आर्य समाज।
गुरुकुल खोले आर्य समाज। ज्ञान टटोले आर्य समाज।
शुद्धि करावे आर्य समाज। आर्य बनावे आर्य समाज।
यज्ञ रचावे आर्य समाज। सन्ध्या सिखावे आर्य समाज।
दम्भ मिटावे आर्य समाज। व्यसन छुड़ावे आर्य समाज।
बिछुड़े मिलावे आर्य समाज। बिगड़ी बनावे आर्य समाज।
गिरते उठावे आर्य समाज। सब को बढ़ावे आर्य समाज।
प्रेम से बोले आर्य समाज। कभी न डोले आर्य समाज।
संकट झेले आर्य समाज। मौत से खेले आर्य समाज।
पर दुःख ले ले आर्य समाज। जीवन मेले आर्य समाज।
दलितोद्धारक आर्य समाज। उन्नति-कारक आर्य समाज।
शुद्ध विचारक आर्य समाज। परम सुधारक आर्य समाज।
जान से प्यारा आर्य समाज। आंख का तारा आर्य समाज।
सब से न्यारा आर्य समाज। "पथिक" हमारा आर्य समाज।

जानते नहीं मानते नहीं

तर्ज़ :- मिलती है ज़िन्दगी में मुहब्बत कभी-कभी

ईश्वर को मानते हैं लोग जानते नहीं।
मृत्यु को जानते हैं मगर मानते नहीं।

कैसा अन्धेर है यह कि छोटी सी बात की,
असलियत जानते हुए भी जानते नहीं

दुनियां को लूटते हैं बड़े इल्मो हुनर से,
चादर फ़रेब की ये कभी .तानते नहीं।

तिनका किसी की आंख का देखें ये बार-बार,
अपनी में हो शहतीर भी तो मानते नहीं।

सच्चाई ज़िन्दगी में भूल कर न आ सकी,
कहने को कभी झूठ ये बखानते नहीं।

मतलब पड़े तो लोग इर्द गिर्द घूमते,
जब वक्त निकल जाए तो पहचानते नहीं।

बस एक ही को जान कर उसी के हो गए,
दर दर की ख़ाक हम तो 'पथिक' छानते नहीं।

दिव्य-ज्योति

तर्ज़:- यह माना मेरी जां मुहब्बत सज़ा है

ऋषि ने जलाई है जो दिव्य ज्योति
जहां में सदा यों ही जलती रहेगी।
हज़ारों व लाखों को रस्ता मिलेगा
करोड़ों के जीवन बदलती रहेगी।

अविद्या, अभाव और अन्याय जड़ से
हिलाने, जलाने, मिटाने की ख़ातिर।
दयानन्द के जां निसारों की टोली
कफ़न बांध सर पे निकलती रहेगी।

जिधर से भी गुज़रेगी जिस वक्त लेकर
यह हाथों में पाखण्ड खण्डनी पताका।
धर्म देश जाति के सब दुश्मनों को
यह पैरों के नीचे मसलती रहेगी।

पहाड़ों से भिड़ना तूफ़ानों से लड़ना
जनम से ही हम को सिखाया ऋषि ने।
सदा मुश्किलों से निडर जूझने की
तमन्ना दिलों में मचलती रहेगी।

सुनो कान धर कर ऐ दुनियां के लोगो,
“पथिक” आज से इन दीवानों की मस्ती,
सदाचार का भाल ऊंचा करेगी
दुराचार का सर कुचलती रहेगी।

मुश्किलों से क्या डरना

तर्ज़–तेरे नाम दी जपां मैं माला ओ शेरां वाली....

हर हाल में प्रभु रखवाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
जब आसरा जहां से आला तो मुश्किलों से क्या डरना।
देखे संगी साथी सारे अपने और पराए।
पर दुनियां के मालिक जैसा कोई नज़र न आए।
पल्ला हाथ में उसी का सम्भाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला.......
जिसने सृष्टि रचना करके सुन्दर खेल रचाया।
बड़ी अनोखी महिमा उसकी अन्त न जाए पाया।
होवे सर पे जो दीन दयाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला .....
जग में और नशे हैं जितने लावें संकट भारी।
ज़िल्लत और ग़रीबी अन्दर बीतें आयु सारी।
प्रभु नाम का पिया हो प्याला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला.....
मार्ग में बिखरे हों कांटे चाहे घोर अन्धेरा।
सुन ले ओ मतवाले राही कदम न डोले तेरा।
करे राहों में 'पथिक' वह उजाला तो मुश्किलों से क्या डरना
हर हाल में प्रभु रखवाला....

हमारे देश की महिमा

तर्ज़–हमें तो लूट लिया मिलके हुस्न वालों ने (कव्वाली)

हमारे देश की महिमा बड़ी सुहानी है।
सब से निराली है सब से पुरानी है।

कभी इस देश का दुनियां पे राज होता था।
यहां की रीत ही सब का रिवाज होता था।
हज़ारों सैंकड़ों गऊएं घरों में रहतीं थीं।
तभी तो दूध की नदियां यहां पे बहतीं थीं।
पड़ोसी इस तरह आपस में प्यार करते थे।
सभी इक दूसरे पे जां निसार करते थे।
किसी दरवाज़े को ताला न कोई होता था।
हरेक आदमी बेखौफ़ हो के सोता था।
न जुआरी न शराबी न चोर होता था।
ऐसा वातावरण ही चहुं ओर होता था। हमारे देश....

हमारा देश ही मालिक था हर ख़जाने का।
यही था सोने की चिड़िया गुरु ज़माने का।
फ़ख़्र हासिल था इसे देव घर कहाने को।
जहां में एक ही यह दर था सर झुकाने को।
हरेक ज्ञान का दाता इसे बताते थे।
कलाएं सीखने सारे यहीं पे आते थे।
ऋषि मुनियों का यहीं पे निवास होता था।
ज्ञान भण्डार भरा जिनके पास होता था।

दिशाएं गूँजतीं थीं वेद की ऋचाओं से।
सुगन्धि फैलती थी हवन की हवाओं से। हमारे देश...
यहीं पे राम का आदर्श नज़र आया है।
यहीं पे कृष्ण ने गीता का गीत गाया है।
यहीं पे भरत से भाईयों के लगे मेले हैं।
इसी की गोद में अर्जुन व भीम खेले हैं।
हुए हैं द्रोण व भीषम से पुरुष लासानी।
दधीचि, हरिशचन्द्र और करण से दानी।
कहीं हनुमान कहीं विदुर जी की भक्ति है।
कहीं पर ब्रह्मचर्य की अमोघ शक्ति है।
लुटाईं दौलतें जिस पर सदा बहारों ने।
किया सिजदा इसी धरती को चाँद तारों ने। हमारे देश
यहाँ की देवियां विदुषी महान होतीं थीं।
तेज की लाट व अग्नि समान होतीं थीं।
सती सीता, अनुसूया, शकुन्तला जैसी।
लोपामुद्रा, शुभा सुलभा, मदालसा जैसी।
गार्गी, भारती जब उठ के बात करतीं थीं।
तो याज्ञवल्क्य व शंकर को मात करतीं थीं।
जभी कुन्ती या कौशल्या की याद आती है।
तभी सम्मान में गर्दन मेरी झुक जाती है।
"पथिक" इतिहास में यह खोज हमने भारी की।
सदा पूजा हुई इस देश की सन्नारी की। हमारे देश

किसी पर भूल कर विश्वास अगर कर लोगे।
अजी दामन को गर्म आँसुओं से भर लोगे। सुनो जी..
बड़ा सुन्दर बड़ा प्यारा सा नाम धरते हैं।
मगर उस नाम से उलटे ही काम करते हैं।
यहां पे आज के इनसान की यह फ़ितरत है।
ग़ैर से दोस्ती अपनीं के लिए नफ़रत है।
भाई भाइयों से बिगड़ते हैं ओर झगड़ते हैं।
ज़रा सी बात पे आपस में उलझ पड़ते हैं।
बहु बेटी की चौराहे में लाज लुटती है।
सगे मां बाप की इज़्ज़त भी आज लुटती है।
मतलबी चोर दग़ाबाज़ मित्र मिलते हैं।
नेक बन्दों के भी उलटे चरित्र मिलते हैं। सुनो जी.
आज गऊओं की तो करते नहीं टहल सेवा।
मिले फिर किस तरह तन्दरुस्त सेहत का मेवा।
मांस खाते हैं व सिगरिट शराब पीते हैं।
खाने पीने के वास्ते ही लोग जीते हैं।
बुरी संगत के हमेशा शिकार रहते हैं।
तीस दिन ही महीने में बीमार रहते हैं।
सभी का रहन सहन खान पान बिगड़ा है।
चले क्या ज़िन्दगी साज़ो सामान बिगड़ा है।
कहें तो क्या कहें कुछ भी नहीं कहा जाए।
"पथिक" चुप ही रहें चुप भी नहीं रहा जाए। सुनो जी..

आज की हकीकत बयानी

तर्ज़–हमें तो लूट लिया मिलके.....

सुनो जी आज की यह हकीकत बयानी है।
न यह अफ़साना है और न कहानी है।

बहुत अफ़सोस कि हम अपनी शान खो बैठे।
चमकते दमकते गौरव से हाथ धो बैठे।
कहां वह वक्त कहां आज का ज़माना है।
वह तो कोई राजमहल था यह कैदख़ाना है।
वही सूरज वही चन्दा वही सितारे हैं।
मगर इस बाग़ के बदले हुए नज़ारे हैं।
न तो वे पुरुष न वे देवियां मिलें अब तो।
न वे माली हैं न वे फूल ही खिलें अब तो।
सभी ने आज अपने रूप रंग बदले हैं।
जिये जाते हैं पर जीने के ढंग बदले हैं। सुनो जी...

कोई भी काम बिना कपट छल नहीं होता।
कौन सा पाप है जो आज़ कल नहीं होता।
सच्चाई ढूँढने पर भी यहाँ नहीं मिलती।
झूठ के सामने सच्च की ज़बां नहीं हिलती।
यहाँ तक आ गई इख़लाक में गिरावट है।
कि हर दुकान की हर चीज़ में मिलावट है।
न तो कोई धर्म कर्म का ख़याल करता है।
एक से दूसरा छल में कमाल करता है।

गीत प्रभु जी दे गाया करो

तर्ज़ :–जोत से जोत जगाते चलो।

व्यर्थ समय न गंवाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो।
इक पल वी परमेश्वर नूँ
दिल चों कदे न भुलाया करो। व्यर्थ समय....

हक जीवन दा लै के आया दुनियां ते हर प्राणी।
हर दिल अन्दर प्रभु वस्सदा ए सत्पुरुषां दी वाणी।

दिल न किसे दा दुखाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय न....

मानव मानव एक बराबर ईश्वर दे सब बन्दे।
खुदग़र्ज़ां ने आन बिछाए मज़बां दे सब फन्दे।

सब मत भेत मिटाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय न......

हुन्दा आया हो के रहवेगा परमेश्वर दा भाणा।
जो मिलदा ए वण्ड के खा लौ जग तों कीह लै जाणा।

कल्लेयां कदे वी न खाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय न....

तूँ वी मुसाफ़िर मैं वी मुसाफ़िर सिर ते रात हनेरी।
'पथिक' कहे जो मन्ज़िल तेरी ओहियो ई मन्ज़िल मेरी।

भुल्लेयां नूं राह दिखाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय....

बोलियां

1. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया चाये।
   महा ऋषि दयानन्द ने साडे सुत्ते होए भाग जगाये।
2. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया छोले।
   वेख के पाखण्ड खण्डनी दिल पाखण्डियां दे डोले।
3. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया छल्ला।
   इक पासे जग सारा इक पासे दयानन्द कल्ला।
4. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया फीते।
   जिन्ने उपकार ऋषि दे ऐने होर नहीं किसे ने कीते।
5. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया लोई।
   सारा जग छान मारेया डिठा ऋषि वरगा न कोई।
6. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया वहियां।
   स्वामी दयानन्द तेरियां सारे जग विच धुम्मां पईयां।
7. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया गन्ने।
   ऋषि मुनि योगी देवता तैनूँ कुल दुनियां पई मन्ने।
8. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया दाणे।
   केहड़ा ए विद्वान् जग ते जेहड़ा गुण तेरे न जाणे।
9. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया गानी।
   कौन करे रीसां तेरियां तू एं वीर पुरुष लासानी।
10. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया ढेरे।
    जोगिया टंकारे वालया जाईये 'पथिक' सदके तेरे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

तर्ज़ :-कव्वाली

वीर योद्धा लोह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।
धर्म अनुरागी सभी नियमों के वे पाबन्द थे।
चल पड़े निर्भीक हो प्यारे ऋषि की राह पर।
युक्तियों से काट डाले गिर्द जितने फन्द थे।
पर्वतों से भी रहे मज़बूत जिन के हौसले,
आसमानों की बुलन्दी से वह बहुत बुलन्द थे।
आततायी पुरुष भी चरणों में आख़िर झुक गए,
भक्त वह भगवान के दयानन्द के फर्ज़न्द थे।
सरसतामय सरल सुन्दर भाव अति गम्भीर हो,
जो रहे सब की ज़बां पर एक ऐसा छन्द थे।
आधुनिक दौलत कोई चाहे न उनके पास थी,
मगर वैदिक सम्पदा से तो वह दौलत मन्द थे।
इसलिए सारे का सारा भेंट जीवन कर दिया,
"पथिक" वैदिक धर्म के मन्तव्य उनको पसन्द थे।

स्वतन्त्रानन्द ने

दीन दुखियां तों तन मन वारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानंद ने ।
सारा जीवन तपस्वी गुज़ारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानंद ने ।
पिंड मोही दा मोह दिलों तोड़ेया।
नाता सच्चे प्रभु दे नाल जोड़ेया।
इक जोगी दा रूप जदों धारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने–
देश अपने दा कीता सुधार वी।
नाले जाके समुन्दरां तों पार वी।
वेद विद्या दा चानन खिलारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने–
उपदेशकां नूँ कीता तैयार जी।
ताकि वेदां दा होवे प्रचार जी।
सिरों ऋषियाँ दा कर्ज़ा उतारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने–
ख़ून अपना लुहारु विच डोहलेया।
नारा वैदिक धर्म दा ही बोलेया।
आर्य जाति दा मस्तक शिंगारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने–
तेज़ जाहो जलाल जदों वेखेया।
मथा ज़ालिम निज़ाम ने वी टेकया।
तीर हक दा निशाने उत्ते मारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने–
भावें रस्ते च आईयां हनेरियां।
पहुंचा मन्ज़िल ते कर के दिलेरियां।
'पथिक' संकट नूँ हरदम वंगारेया मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने–

रुपैया

तर्ज़–मेरा यार बना है दूल्हा और फूल खिले हैं दिल के

यहां बाबा बड़ा न भैय्या सबसे है बड़ा रुपैया।
इसी के सारे रिश्ते नाते सब का यही रवैया।
यहां बाबा बड़ा न भैय्या......
गोल रुपैया चांदी का हो या कागज़ का नोट।
छोटा सा है फिर भी इसकी बहुत बड़ी है ओट।
इस के आगे थम जाती है वेगवती पुरवैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैया......
किसी तरह से मिले रुपैया यत्न करें दिन रैन।
पल दो पल के लिए भी देखा नहीं किसी को चैन।
धन की वर्षा से भी मन की भरती नहीं तलैया।
यहां बाबा बड़ा न भैय्या......
पास रुपैया हो तो सारे बन जाते हैं यार।
लेकिन ख़ाली जेब देख कर देते हैं दुत्कार।
आज ढूँढता फिरे सुदामा मिलता नहीं कन्हैया।
यहां बाबा बड़ा न भैय्या.......
"पथिक" रुपैये के चक्कर में चला आज का दौर।
कहीं देखलो बना आदमी कठपुतली के तौर।
नाच रहा है बिना ताल के ता थैय्या ता थैय्या।
यहां बाबा बड़ा न भैय्या......

दयानन्द की प्रतिज्ञा

तर्ज़–है प्रीत जहां की रीत सदा मैं गीत उसी के गाता हूं।

गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी पूरी करके दिखलादूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर मैं जीवन भेंट चढ़ादूँगा।
गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी............

धन पास नहीं तन मन अपना श्री गुरुचरणों में धरता हूं।
गुरु आज्ञा पालन करने की मैं आज प्रतिज्ञा करता हूं।
अपना सर्वस्व लुटा कर भी अपना कर्त्तव्य निभादूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर.....

जन हित के लिए विष के प्याले अमृत करके मैं पी लूँगा।
उफ़ तक न करुंगा शोलों पर हंसते हंसते मैं जी लूंगा।
कांटों से भरी इन राहों पे फूलों की तरह मुस्का दूंगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर.....

पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते तूफ़ानों का मुँह मोड़ूँगा।
मैं सागर को मथ डालूँगा पर्बत का मस्तक फोड़ूँगा।
वेदों की अमृतवाणी का मैं घ़र घर नाद बजा दूंगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर.....

जब शिष्य आपका उठ कर के वेदों का बिगुल बजाएगा।
इक बार ज़माना ऋषियों का फिर 'पथिक' लौट कर आएगा।
भारत की पावन धरती को फिर से मैं स्वर्ग बना दूंगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर.....

गृह प्रवेश पर

तर्ज़–भारत का कर गया बेड़ा पार वह मस्ताना योगी

सुन्दर सुहाना गृह प्रवेश जी वधाई होवे।
घर वाले हसदे रैहण हमेश जी वधाई होवे।

वेदां दे मन्त्र बोले। खुशियाँ दे बूहे खोले।
मिलेया ए ऋषियां दा सन्देश जी वधाई होवे....

श्रद्धा नाल यज्ञ रचाया। जल वायु शुद्ध बनाया।
बचेया दुर्गन्धि दा न लेश जी वधाई होवे ....

सुखां दी वर्षा होवे। दुखां दे पूर डुबोवे।
मिट जावन सारे कष्ट क्लेश जी वधाई होवे....

मेहरां दी चादर ताने। रखे भरपूर ख़जाने।
सब जग दा पालनहार महेश जी वधाई होवे.....

चलके सत्संगी आवन। ईश्वर दी महिमा गावन।
होवन विद्वानां दे उपेदश जी वधाई होवे....

जेहड़ा वी याचक आवे। दर तों न ख़ाली जावे।
"पथिक" संन्यासी ते दरवेश जी बधाई होवे....

महर्षि दयानन्द की जय।

महर्षि दयानन्द की जय

उलट पलट नटखट झटपट,

फट बढ़ता गया अभय।

महिर्ष दयानन्द की जय।.....

बड़े बड़े दुर्गों को तोड़ा।

और तूफ़ानों का मुंह मोड़ा।

नतमस्तक हो चरण चूमती रहती सदा विजय।

महर्षि दयानन्द की जय.....

जहाँ भी उसने पैर जमाया।

नहीं किसी से गया उठाया।

सारी दुनियां मिलकर भी न बदल सकी निश्चय।

महर्षि दयानन्द की जय....

जो हत्यारा सम्मुख आया।

श्री चरणों में शीश झुकाया।

दयानन्द से दया मांगते बड़े-बड़े निर्दय।

महर्षि दयानन्द की जय....

बेशक अपनी जान गंवाई।

भारत मां की लाज बचाई।

रहूं 'पथिक' उसके गुण गाता जब तक मिले समय।

महर्षि दयानन्द की जय....

बातों ही बातों से

बातों ही बातों से होता जीवन का निर्माण नहीं।
देश धर्म जाति का तो क्या अपना भी कल्याण नहीं।
बातों ही बातों से होता.....

हिम्मत वालों के आगे पर्बत भी शीश झुकाते हैं।
वह कैसा इनसां है जिसकी मुट्ठी में तूफ़ान नहीं।
बातों ही बातों से होता.....

मेहनत से तो यहां हज़ारों निर्धन से धनवान बने।
मगर हुए बातों से पूरे किसी के भी अरमान नहीं।
बातों ही बातों से होता....

कहने में और करने में तो रात और दिन का अन्तर है।
कह लेना आसान है लेकिन कर लेना आसान नहीं।
बातों ही बातों से होता....

मदद करे भगवान उसी की अपनी मदद जो आप करें।
आलस के मारों की करता मदद कभी भगवान नहीं।
बातों ही बातों से होता.....

दिल में यदि इरादा कर ले किसी काम को करने का।
कौन सा ऐसा काम है जिसको कर सकता इनसान नहीं।
बातों ही बातों से होता....

शायर शेर "पथिक" दुनियां में रस्ता आप बनाते हैं।
बुज़दिल है जो कहता है कि रस्ते की पहचान नहीं।
बातों ही बातों से होता....

कभी सरदी कभी गरमी

तर्ज़ :– यहां बदला वफ़ा का बेवफ़ाई के सिवा क्या है।

कभी सरदी कभी गरमी कभी बरसात होती है।
उजाला दिन का मिटता है अन्धेरी रात होती है।
सियाही और सफ़ेदी में सगी बहिनों का रिश्ता है,
अन्धेरी रात के पीछे हसीं परभात होती है।
चियूँटी के लिए जल का कटोरा ही समन्दर है,
ख़यालों में तो वह क्या क्या लिए जज़बात होती है।
कोई सारी उमर दे दे तो फिर भी कुछ नहीं मिलता,
किसी का हाथ लग जाए तो बाज़ी मात होती है।
अकेला चांद ही रौशन किया करता है दुनियां को,
सितारों की तो रौनक लिए बारात होती है।
फिरें बिछड़े हुए दोनों भरे दुनियां के मेले में,
मिलाना हो विधाता ने तो मुलाकात होती है।
बनें बिगड़ी हुई बातें बनीं बातें बिगड़ जाएं,
"पथिक" बातों ही बातों में कुछ ऐसी बात होती है।

क्या हो गया

तर्ज़ (स्वयं बनाईए)

भगवान मेरे देश को क्या हो गया।
जलवा सुनहरी शान वाला खो गया।
पूजा की पात्र थीं मेरे भारत की नारियां।
पर अब तो लग गईं इन्हें कितनी बीमारियां।
सब धर्म कर्म ही कोई बस धो गया।
भगवान मेरे देश को क्या हो गया।
पहले के पुरुष देवता थे और महान् थे।
मन वचन कर्म के धनी चरित्रवान् थे।
पर आज यह आदर्श ही समझो गया।
भगवान मेरे देश को क्या हो गया।
ऋषियों के शुभाचरण कोई जानता नहीं।
वेदों के सदुपदेश कोई मानता नहीं।
यह रोग ही लपेटता सब को गया।
भगवान मेरे देश को क्या हो गया।
सारे ज़माने में कभी भारत का नाम था।
जगना जगाना विश्व को इसका ही काम था।
खुद "पथिक" पहरेदार ही अब सो गया।
भगवान मेरे देश को क्या हो गया....

पत्थर के देवता

तर्ज़ः– कव्वाली

देखो दीवाने लोग भी कैसा कमाल करते हैं।
पत्थर को ईश्वर की जगह पर इस्तेमाल करते हैं।
खुद ही बना लें मूर्ती खुद बैठ कर पूजा करें,
पूछो तो कहदें आप यह कैसा सवाल करते हैं।
मन्दिर का फाटक बन्द कर ताला लगा दें रात को,
समझें इसे परमात्मा पर देख भाल करते हैं।
इतने बड़े संसार का रखता है खुद ख़याल जो,
कितने ग़ज़ब की बात है उसका ख़याल करते हैं।
पत्थर के हैं ये देवता फिर इनसे कैसा मांगना,
क्या जड़ पदार्थ भी कभी दे कर निहाल करते हैं।
चाहे मिलें सौ नेमतें चाहे इन्हें कुछ न मिले,
न तो करें यह शुकरिया न ही मलाल करते हैं।
है "पथिक" सच्ची बात पूजा ठाकुरों की लोग ये,
बुद्धि को अपने आप से बाहर निकाल करते हैं।

जन्म दिन पर

तर्ज़ :–यहां बदला वफ़ा का बेवफ़ाई के सिवा क्या है।

जन्म दिन आज फिर आया बधाई हो बधाई हो।
खुशी का रंग है छाया बधाई हो बधाई हो।
हवन से है सुगन्धित हो गया वातावरण सारा।
ऋचाएं वेद की बोली गईं गूँजा गगन सारा।
यह दिन ईश्वर ने दिखलाया बधाई हो बधाई हो...
कहीं बैठे पड़ोसी हैं कहीं बैठे हैं सम्बन्धी।
कहीं पर कहकहे उठते कहीं उठती है सुगन्धी।
सभी ने प्रेम से गाया बधाई हो बधाई हो।....
जिधर देखो उधर मिलते नज़ारे ही नज़ारे हैं।
दिलों में फूट निकले आज खुशियों के फ़व्वारे हैं।
बाग़ परिवार लहराया बधाई हो बधाई हो।....
जिए सौ साल तू राजा रहे खुशहाल जीवन में।
बहारें झूम के आएं तुम्हारे दिल के आंगन में।
रहे मन ख़ूब हर्षाया बधाई हो बधाई हो।....
करे विद्या ग्रहण इतनी कि जग में नाम हो रौशन।
जहां में चांद सूरज की तरह हर काम हो रौशन।
बुज़ुर्गों का रहे साया बधाई हो बधाई हो।.....
हृदय अन्दर सच्चाई हो मधुर वाणी सदा बोले।
धर्म की राह पर चलते हुए तिल भर नहीं डोले।
"पथिक" नीरोग हो काया बधाई हो बधाई हो।

महिमा गाई

तर्ज़ः—सज्जनां वे दूर दूर केहड़ी गल्ले रैहनां एं।

बन्देया तूं ओम् नाम वाली महिमा गाई जा।
दुनियां दे सारे सुख ज़िन्दगी च पाई जा।
नर तन पाया कर देर ना।
लभने सुहाने दिन फेर ना।
कीमती बड़ा ए चोला ऐंवें न गवाई जा।
बन्देया तूं ओम् नाम वाली.....
बदियां तों बन्दे मुख मोड़ लै।
विरतियां नूँ प्रभु नाल जोड़ लै।
दिल नूँ ठिकाने रख नेकियां कमाई जा।
बन्देया तूं ओम् नाम वाली....
घुम भावें सारा एह जहान तूं।
छड्ड पिछे पैरां दे निशान तूं।
सच्च दियां राहवां उत्ते कदम वधाई जा।
बन्देया तूं ओम् नाम वाली.....
मूरखा तूं कीता कदे ग़ौर ना।
तेरे जिहा प्राणी कोई होर ना।
"पथिक" पते दी गल दिल च वसाई जा।
बन्देया तूं ओम् नाम वाली....

प्रभु दा नाम

तर्ज़ः–जय बोलो जय बोलो दयानन्द ऋषि की जय बोलो।

जपना जी जपना प्रभु दा नाम हर दम जपना जी।
सारी ख़लकत दा जो ख़ालिक।
जो है कुल दुनियां दा मालिक।
रचना जिदी तमाम हरदम जपना जी। जपना जी....
प्रभु नाम दी चढ़े खुमारी।
पी के वेखो सब इक वारी।
बड़ा अनोखा जाम हर दम जपना जी। जपना जी....
सन्तां दा उपदेश वी एहो।
वेदां दा सन्देश वी एहो।
ऋषियां दा पैग़ाम हर दम जपना जी। जपना जी....
जो नहीं उसदा नाम ध्यांदे।
दर दर रुलदे ठेडे खांदे।
मिलदा नहीं आराम हर दम जपना जी। जपना जी....
प्रभु नाम दी ढाल बना लौ।
इस नाल अपना आप बचा लौ।
जीवन है संग्राम हर दम जपना जी। जपना जी....
ऋषि मुनि योगी सब कैंहदे।
टुरदे फिरदे उठदे बैंहदे।
"पथिक" सुबह ते शाम हर दम जपना जी। जपना जी।....

कुड़ियो स्कूल दियो

तर्ज़ :–गोरे रंग ते दुपट्टा केहड़ा सजदा

चुप करके कलासां विच बैहणां नी कुड़ियो स्कूल दियो।
किते लड़दियां न आपो विच रैहणां नी कुड़ियो स्कूल दियो।
आन के स्कूल विच शोर नहीं मचाई दा।
इंज नुकसान हुन्दै सब दी पढ़ाई दा।
रौला पा के न बणियों शुदैणा नी कुड़ियो स्कूल दियो।
चुप करके कलासां विच बैहणां.....

सदा अध्यापकां दी आज्ञा नूं पालना।
करके बहाने कदे हुकम न टालना।
चंगी शिक्षा है ज़िन्दगी दा गैहणां नी कुड़ियो स्कूल दियो।
चुप करके कलासां विच....

लैणा जे इन्हां दे कोलों विद्या दा दान जे।
बदले च देनां तुसां इज़्ज़त मान जे।
ऐंवें कर्ज़ा नहीं सिरां उत्तों लैहणा नी कुड़ियो स्कूल दियो।
चुप करके कलासां विच....

साडा एह स्कूल उच्चा एस नूँ उठाना एं।
रल मिल असां एहदा नां चमकाना एं।
तुसीं मन्न लौ "पथिक" जी दा कैहणा नी कुड़ियो स्कूल दियो।
चुप कर के कलासां विच......

हमारी पाठशाला

तर्ज़ :–(स्वयं बनाईए)

बड़ी अच्छी बड़ी सुन्दर बड़ी आला।
हमारी पाठशाला हमारी पाठशाला।
कोई पढ़ने को आया है, तो फल विद्या का पाया है।
यहां बचपन दिया जिसने वह जग में जगमगाया है।
यह घर घर में किया करती है उजाला।
हमारी पाठशाला हमारी पाठशाला। बड़ी अच्छी....
कोई तोला कोई माशा, सभी अपनी पढ़ें भाषा।
जो कल की शान हैं बच्चे हमारे देश की आशा।
कई रंगों के फूलों की बनी माला।
हमारी पाठशाला हमारी पाठशाला। बड़ी अच्छी....
हवन संन्ध्या सिखाते हैं, धर्म शिक्षा पढ़ाते हैं।
हमें अनमोल गुण देकर सफल जीवन बनाते हैं।
ज़माने में काम करती है निराला।
हमारी पाठशाला हमारी पाठशाला। बड़ी अच्छी.....
'पथिक' इस के बिना दूजा, हमें अब तक नहीं सूझा।
गुरुजन देव हैं अपने करें जिनकी सदा पूजा।
यही तीरथ यही मन्दिर और शिवाला।
हमारी पाठशाला हमारी पाठशाला। बड़ी अच्छी....

वैदिक धर्म है प्यारा

तर्ज़ :–सिर जावे तां जावे मेरा वैदिक धर्म न जावे।

वैदिक धर्म है प्यारा मुझे वैदिक धर्म है प्यारा।
कुल दुनियां से न्यारा मुझे वैदिक धर्म है प्यारा।
गुरुओं का भी गुरु है ईश्वर।
वेद दिए जिसने धरती पर।
बही ज्ञान की धारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा....
ईश्वर ने जब जगत बनाया।
वेदों का प्रकाश फैलाया।
चार ऋषियों के द्वारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा...
ऋषियों ने जो वेद सुनाया।
वही तो वैदिक धर्म कहाया।
सुने ज़माना सारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा...
ईश्वर जीव प्रकृति सदा से।
मिलकर तीनों की सत्ता से।
सकल जगत विस्तारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा....
वर्णाश्रम की सुन्दर सीढ़ी।
बनी रहे पीढ़ी दर पीढ़ी।
स्वर्ग का यही नज़ारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा....
ऊंच नीच न कोई यहां पर।
“पथिक” सभी इनसान बराबर।
कहे यह वेद हमारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा....

दुनियां में आने वाले

तर्ज़ :–आया सी स्वामी सुत्ता भारत जगान बदले।

दुनियां में आने वाले ईश्वर गुण गाते जाना।
उसकी कुदरत के आगे मस्तक झुकाते जाना।
लाखों कष्टों को सहना, मुख से कुछ भी न कहना।
काँटों पे चलते रहना लेकिन मुस्काते जाना। दुनियां....
किसने तन का यह हाला, सुन्दर सांचे में ढाला।
दी है सांसों की माला मन में दुहराते जाना। दुनियां....
जीवन कागज़ की नैय्या, न जाने कौन खिवैय्या।
कैसे चलती है भैय्या कुछ तो समझाते जाना। दुनियां....
किसकी मरज़ी से प्यारे, टिमटिम करते हैं तारे।
देता है कौन सहारे सच सच फ़रमाते जाना। दुनियां....
किसने फूलों में डाली, सुन्दर खुशबू और लाली।
ठहरो बगिया के माली यह तो बतलाते जाना। दुनियां......
जैसा जो करके जाता, फल भी वैसा ही पाता।
'पथिक' जो है फलदाता उसको अपनाते जाना। दुनियां....

स्वागत

तर्ज़ :—मैं किस विध करां बयान प्रभु तेरी महिमा

आगन्तुक महानुभाव आपका स्वागत है।
हे जन गण मन के राव आप का स्वागत है।

इक यह सुन्दर समय सुहाना।
उस पर हुआ आपका आना

स्वर्ण सुगन्ध सुहाव आप का स्वागत है।
आगन्तुक महानुभाव....

सूरज बन कर आप पधारे।
फीके पड़ गए चांद सितारे।

सब पर पड़ा प्रभाव आप का स्वागत है।
आगन्तुक महानुभाव....

हम हाथों में हार लिए हैं।
और आंखों में प्यार लिए हैं।

भरे दिलों में चाव आप का स्वागत है।
आगन्तुक महानुभाव....

नमन करो स्वीकार हमारा।
वन्दन है शत बार हमारा।

'पथिक' प्रेम प्रस्ताव आप का स्वागत है।
आगन्तुक महानुभाव....

जन्म सुधार

तर्ज़ :—जय बोलो जय बोलो दयानन्द ऋषि की जय बोलो।

नाम जपेयाँ हो जाए जन्म सुधार प्रभु दा नाम जपेयां।
काम क्रोध न नेड़े आवे।
मोह माया न जाल बिछावे।
हटे दूर हंकार प्रभु दा नाम जपेयां। नाम जपेयां.....
एह जग महफ़िल जुएसाज़ी।
जीवन दी ला बैठां एं बाज़ी।
कदे न आवे हार प्रभु दा नाम जपेयां। नाम जपेयां....
दुनियां रूपी गहरा समन्दर।
आ फसेयां एं इस दे अन्दर।
हो जाए बेड़ा पार प्रभु दा नाम जपेयां। नाम जपेयां....
लख चौरासी बन्धन टुट्टे।
जन्म मरण दा चक्कर छुट्टे।
मिले प्रभु दा द्वार प्रभु दा नाम जपेयां। नाम जपेयां....
सबने अपना आप जताया।
कौन है अपना कौन पराया।
मतलब दा संसार प्रभु दा नाम जपेयां। नाम जपेयां....
मिलेया वक्त प्रभु गुण गा लै।
जीवन अपना सफल बना लै।
"पथिक" न सोच विचार प्रभु दा नाम जपेयां। नाम जपेयां.....

नाम ओंकार दा

तर्ज़ :– खाओ राम जी मेरा भोजन ग़रीब दा

जपो प्यारेयो सच्चा नाम ओंकार दा।
ऋषि मुनियां दा ओम प्यारा।
कुल दुनियां दा पालन हारा।
अपनेयां प्यारेयां नूँ एहो तारदा सच्चा नाम ओंकार दा–
नाम प्रभु दा जो कोई ध्यावे।
जीवन अपना सफल बनावे।
दुनियां च दुःखी हुन्दा जो विसारदा सच्चा नाम ओंकार दा–
भगत जनां दे कष्ट मिटावे।
दुःख बिसरा के सुख बरसावे।
ग़मां विच तपदेयां दिलां नूँ ठारदा सच्चा नाम ओंकार दा–
पल विच होवे दूर हनेरा।
रौशन कर दए चार चुफ़ेरा।
सुखां दियां दौलतां सिरां तों वारदा सच्चा नाम ओंकार दा–
अमृत रस दा प्याला पीवे।
बेफ़िकरी दे नाल ओह जीवे।
दिल रूपी शीशे विच जेहड़ा धारदा सच्चा नाम ओंकार दा–
अपने अपने भाग जगा लौ।
उस ईश्वर दे सब गुण गा लौ।
"पथिक" जो दाता सारे संसार दा सच्चा नाम ओंकार दा–

ओम् जपो

ओम् जपो सब प्राणी मिलकर ओम् जपो।
सफल बने ज़िन्दगानी मिल कर ओम् जपो।
ओम् नाम है सब से न्यारा।
सब से उत्तम सब से प्यारा।
कोई न जिसका सानी मिल कर ओम् जपो....
घट घट वासी अन्तर्यामी।
सब का मालिक सब का स्वामी।
प्रियतम दिलबर जानी मिल कर ओम् जपो।....
जिस ने सारा जगत रचाया
यह धरती आकाश बनाया।
रचे आग और पानी मिल कर ओम् जपो।....
कष्ट विनाशक और सुखदायक।
रक्षक पालक परम सहायक।
धन, बल, यश का दानी मिल कर ओम् जपो।....
पृथ्वी सूरज चाँद सितारे।
ऋषि मुनि योगी गुरू जन सारे।
जपते ज्ञानी ध्यानी मिल कर ओम् जपो।....
न कोई लगता पैसा धेला।
न कोई मुश्किल न ही झमेला।
बड़ी "पथिक" आसानी मिल कर ओम् जपो।....

रोयां तैनूं कीह लभना

तर्ज़ः–नी मैं चिट्ठी आं लदाखों आई खोल के पढ़ा लै गोरिये।

चुप कर के जिन्दड़िए बैह जा रोयां तैनूँ कीह लभणा।
रोनां छड के दुःखां दे नाल खैह जा रोयां तैनूँ कीह लभणा।
डक लै तूं हौके हांवां बुल्लियाँ नूँ सी लै नी।
सभे ग़म खा ले जिन्दे हंजुआं नूँ पी लै नी।
बन्द करके ज़बान चुप रैह जा रोयां तैनूँ कीह........
सुज्जियां ने रो रो अखां सिर नूँ खपाया ई।
बिलख बिलख फांवीं होई दिल कलपाया ई।
इस ग़म दे पहाड़ उत्तों लैह जा रोयां तैनूँ कीह.........
जग नाल हुन्दी आई गल्ल एह अनोखी नहीं।
रब्ब दा ए भाणा जिन्दे होर कोई दोखी नहीं।
दड़ वट्ट के समय दी सट्ट सैह जा रोयां तैनूँ कीह.......
कदी न कदी ते जाणैं परत के परौहणे ने।
टुट्टना ज़रूरी हुन्दै कच्च दे खडौणे ने।
एह समझ के तूँ सिधे राहे पै जा रोयां तैनूँ कीह.......
वक्त ते ठिकाना कदी मौत नहियों दसदी।
एहो गल जेहड़ी नहियों दुनियाँ दे वसदी।
ज्ञान गंगा दे वैहण विच वैह जा रोयां तैनूँ कीह........
दुनियां तों दाना पानी जदों आन मुक्केया।
ओदों शहनशाहवां ने वी डेरा एथों चुक्केया।
सारे जग नूँ "पथिक" सच कैह जा रोयां तैनूँ कीह..

अख़ीर दा वेला

तर्ज़ :– रुसेया ननाने तेरा वीर नी हसके नहीं माही बोलदा

आया सिर उते वेला ए अख़ीर दा ओम नाम क्यों नहीं बोलदा
फिक्का पै गया ए रंग तस्वीर दा ओम नाम क्यों नहीं बोलदा
बन्देया तू राही एं दुनियां सरां एं।
चार दिन रह के एथे चलना अगांह एं।
ऐंवें करें पया दाहवा तूं जागीर दा ओम नाम क्यों नहीं....
मौत शिकारी ए तूं ओहदा शिकार एं।
विषयां दी मस्ती अन्दर निकलेया बाहर एं।
ख़ाली जाना नहीं निशाना ओहदे तीर दा ओम नाम क्यों....
मौत दे अग्गे कोई चाल नहीं चलदी।
किसे दी वी ओहदे अग्गे दाल नहीं गलदी।
होवे राजा भावें पुत्तर वज़ीर दा ओम नाम क्यों नहीं....
लक्खां करोड़ां लोकी जग विच हो गए।
किसे दा पता न कोई किधर नूं खो गए।
जदों आन वज्जा धक्का तकदीर दा ओम नाम क्यों नहीं....
सोच लै तूं ऐथे तेरा कोई न ठिकाना एं।
दुनियां तों वारी वारी सब ने ही जाना एं।
एहो रस्ता ए ग़रीब ते अमीर दा ओम नाम क्यों नहीं....
एस नगरी दे विच कोई नहीं अपना।
अपना बना के ऐंवें तकनां एं सपना।
खैहड़ा छड्डना एं "पथिक" शरीर दा ओम नाम क्यों नहीं....

प्यारा ओम्

तर्ज़–रघुपति राघव राजा राम राजा राम सीता राम

नाम प्रभु का प्यारा ओम् प्यारा ओम् प्यारा ओम्।
दाता पालनहारा ओम् प्यारा ओम् प्यारा ओम्।

दूध में हैं घी सितार के सुरों में राग है।
तेल है तिलों मे जैसे पत्थर में आग है।

कण कण में विस्तारा ओम् प्यारा ओम् प्यारा ओम्।
नाम प्रभु का प्यारा ओम्......

जो विराजमान है आकाश में पाताल में।
एक सा भविष्य वर्तमान भूतकाल में।

अमृत रस की धारा ओम् प्यारा ओम् प्यारा ओम्।
नाम प्रभु का प्यारा ओम्.........

ओम् इष्टदेव पूजनीय है जहान का।
और कहीं दूसरा न कोई जिसकी शान का।

कुल दुनियां से न्यारा ओम् प्यारा ओम् प्यारा ओम्।
नाम प्रभु का प्यारा ओम्...........

सूर्य और चांद जिसकी आरती उतारते।
नेति नेति कहके जिसको वेद भी पुकारते।

'पथिक' सब का सहारा ओम् प्यारा ओम् प्यारा ओम्।
नाम प्रभु का प्यारा ओम्..........

गौ माता की पुकार

तर्ज़ :– प्रभु चरणां दे नाल चित्त मेरा लगेया रहे।

गौ माता करे पुकार दुःखी मन तड़प रही।
बेकस बेबस लाचार दुःखी मन तड़प रही।
सब को अमृत दूध पिलावे।
सब की जीवन जोत जगावे।
करे सभी से प्यार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे–
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई।
गौ माता सब को सुखदाई।
झेले कष्ट अपार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे–
राम कृष्ण के भक्तो जागो।
अपनी लापरवाही त्यागो।
मिटे ये अत्याचार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे–
गुरु गोबिन्द सिंह के सरदारो।
राणा वीर शिवा के प्यारो।
गरज उठो इक वार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे–
दयानन्द स्वामी के चेलो।
गौ माता हित संकट झेलो।
करो न सोच विचार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे
बूचड़ख़ाने बन्द करावो।
गौ माता के प्राण बचावो।
रहो 'पथिक' तैयार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे–

दया कर दो

तर्ज़– पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही इक नाथ हमारे हो

1. प्रभु जी इतनी सी दया कर दो हमको भी तुम्हारा प्यार मिले
   कुछ और भले ही मिले न मिले प्रभु दर्शन का अधिकार मिले

2. जिस जीवन में जीवन ही नहीं वह जीवन भी क्या जीवन है
   जीवन तब जीवन बनता है जब जीवन का आधार मिले।

3. सब कुछ पाया इस जीवन में बस एक तमन्ना बाकी है,
   हर प्रेम पुजारी को अपने मन मन्दिर में दातार मिले।

4. जिसने तुम से जो कुछ मांगा उसने है वही तुमसे पाया,
   दुनियां को मिले दुनियां लेकिन भक्तों को तेरा दरबार मिले।

5. हम जन्म जन्म के प्यासे हैं और तुम करुणा के सागर हो,
   करुणानिधि से करुणा रस की इक बूंद हमें इक बार मिले।

6. इस मार्ग पर चलते चलते सदियां ही नहीं युग बीत गए,
   मिल जाए 'पथिक' मन्ज़िल अपनी हमको जो तुम्हारा द्वार मिले।

ज्ञान का सागर

ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी है भगवान की।
इसी से मिलती सब सामग्री जीवन के कल्याण की।
ज्ञान का सागर चार वेद............

सब सच्ची विद्याएं जग में प्रकट वेद से होती हैं।
यहीं से जाकर सब नदियां पृथ्वी का आंगन धोती हैं।
उसी को जीवन सार मिला जिसने इसकी पहचान की।
ज्ञान का सागर चार वेद............

सृष्टि एक अदालत है और न्यायाधीश विधाता है।
यहीं पे ही हर प्राणी अपने कर्मों का फल पाता है।
वेद के अन्दर सब रचना है विधि के अमर विधान की।
ज्ञान का सागर चार वेद............

वेद का पढ़ना और पढ़ाना परम धर्म कहलाता है।
सुनना और सुनाना भी कर्त्तव्य बताया जाता है।
वेद ही असली दौलत है दुनियां के हर इनसान की।
ज्ञान का सागर चार वेद................

धन्य धन्य भारत भूमि जिस पर वेदों का गान हुआ।
वेद का अमृत पिया पिलाया तब यह देश महान हुआ।
'पथिक' पुण्य भूमि है यह तो ऋषियों की सन्तान की।
ज्ञान का सागर चार वेद............

कभी नहीं

तर्ज़ :– उन के ख़याल आए तो आते चले गए।

मन में मिलन की चाह तो लाए कभी नहीं।
दर्शन तभी तो ईश के पाए कभी नहीं।
वह फूल क्या बता सके होती है क्या हंसी,
जिस पर पड़े बहार के साए कभी नहीं।
हर वक्त बोलते रहे क्या क्या ज़बान से,
नग़मे प्रभु के झूम के गाए कभी नहीं।
बातें हज़ार शौक से सुनते हैं रात दिन,
ऋषियों के सदुपदेश ही भाए कभी नहीं।
दुखियों को देख राह में बच कर निकल गए,
उन की मदद में हाथ हिलाए कभी नहीं।
दिल की ज़मीं पे चैन की बारिश कहां से हो,
बादल गगन में प्यार के छाए कभी नहीं।
आख़िर मिले तो क्यों मिले मन्ज़िल 'पथिक' तुझे,
मन्ज़िल की ठीक राह पे आए कभी नहीं।

हज़ारों हाथों वाले

तर्ज़–सुनो रे प्यारे भाई प्रभु के भरोसे हांको गाड़ी।

हज़ारों हाथों वाले हमको भरोसा प्रभु तेरा।
तूफ़ानों ने घेर लिया है चारों ओर अन्धेरा।
पास हमारे हीरे मोती है अनमोल ख़जाना।
दाएं बाएं जंगल झाड़ी न कोई ठौर ठिकाना।
धाक लगाए छुप कर बैठा पग पग पे चोर लुटेरा।
हमको भरोसा प्रभु तेरा–हजा़रों हाथों वाले.......
नील गगन पे उमड़ पड़ी हैं ये घनघोर घटाएं।
रात अन्धेरी लम्बी राहें मन्ज़िल कैसे पाएं।
न कोई दीपक न कोई तारा है काफ़ी दूर सवेरा ।
हमको भरोसा प्रभु तेरा–हजा़रों हाथों वाले.......
दीन जनों के तुम रखवाले असहायों के सहाई।
हमने तुम्हारे द्वार पे आके अब तो आस लगाई।
'पथिक' करो इस मन मन्दिर में हे नाथ आन बसेरा।
हमको भरोसा प्रभु तेरा–हज़ारों हाथों वाले.......

मेरे मालिक

तर्ज़–रात भर का है महमां अन्धेरा।

मेरे मालिक प्रभो सब से न्यारे।
बेसहारों के तुम हो सहारे।
आज आया हूँ मैं तेरे द्वारे।
बेसहारों के तुम हो सहारे। मेरे मालिक.........

दीन दुखियों का तू आसरा है।
टेर सुनता है सब की सुना है।
मेरा दिल भी तुझे ही पुकारे।
बेसहारों के तुम हो सहारे। मेरे मालिक...........

तुम ही सब से बड़े देवता हो।
नाखुदाओं के भी नाखुदा हो।
मेरी नैया लगा दो किनारे।
बेसहारों के तुम हो सहारे। मेरे मालिक........

सारी दुनियां के मुश्किलकुशा से।
शहनशाहों के भी शहनशाह से।
मांगता हूँ मैं झोली पसारे।
बेसहारों के तुम हो सहारे। मेरे मालिक........

और किस की शरण में मैं जाऊं।
दासतां अपनी किसको सुनाऊं।
जब 'पथिक' बन्द हैं द्वार सारे।
बेसहारों के तुम हो सहारे। मेरे मालिक.........

यज्ञशाला

वेद से यह सार ऋषियों ने निकाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर यज्ञशाला है।

1. श्रवण चक्षु नासिका त्वक् जिह्वा मन बुद्धि यहां।
सात ऋत्विज मिल निरन्तर यज्ञ करते हैं यहां।
जिसका रक्षा कार्य प्राणों ने सम्भाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर.........

2. प्रेम की समिधाओं से जलती है अग्नि ज्ञान की।
आहुति है सत्य की और भावना बलिदान की।
भक्ति श्रद्धा का यहां पर बोल बाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर.........

3. इस में उठती है सुगन्धि परम दिव्यानन्द की।
मन्द आत्म-प्रकाश से होवे छटा रवि चन्द की।
हर तरफ़ होता उजाला ही उजाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर.........

4. भाग्य से नर तन मिला है यज्ञ करने के लिए।
ईश के आनन्द सागर में उतरने के लिए।
'पथिक' यह आनन्द दुनियां से निराला है।
मनुज का तन एक सुन्दर........

देर है अन्धेर नहीं

तर्ज़–हम देश के सेवक हैं यह है हिन्द प्यारा।

भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं है। अन्धेर नहीं है।
उस ऊंची अदालत में हेर फेर नहीं है। अन्धेर नहीं है।
अन्धेर नहीं है। भगवान के घर..........

सुनते हैं घट पाप का भरता तो ख़ूब जाए।
फिर अपने भार से ही पल भर में डूब जाए।
इन्साफ़ में लगती है जो वह देर नहीं है।
अन्धेर नहीं है। भगवान के घर..........

देखो नियत समय पर सूरज निकलता ढलता।
अनुकूल वक्त लेकर दुनियां में पेड़ फलता।
बिन वक्त यहां शाम और सवेर नहीं है।
अन्धेर नहीं है। भगवान के घर..........

बोलो जहां में किस का सिक्का सदा चला है।
नामो निशान इक दिन दुनियां से मिट गया है।
कब रेत की दीवार बनी ढेर नहीं है।
अन्धेर नहीं है। भगवान के घर..........

खुद को 'पथिक' मिटा के जो धूल में मिलेगा।
इक दिन इसी चमन में वह फूल बन खिलेगा।
फल सबर का मीठा है तुरश बेर नहीं है।
अन्धेर नहीं है। भगवान के घर..........

अमर फल पाएगा

तर्ज़–चली चली रे पतंग मेरी चली रे।

प्रातः उठ के जो प्रभु गुण गाएगा।
वो ही जग में अमर फल पाएगा।
चलें आंधियां हज़ार, टूटें ग़मों के पहाड़,
कोई अपनी जगह से न हिलाएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण..........

दु:ख दर्द सभी मिट जाएं।
पग चूमती रहें सफलताएं।
लिए मन में लगन, हुआ धुन में मगन,
उस प्रभु की शरण में जो आएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण..........

यह दुनियां है किस ने बनाई।
कोई कारीगर देवे न दिखाई।
इसे पालता है कौन, व सम्भालता है कौन,
सभी उलझनों का भेद खुल जाएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण..........

तुम चाहो जो 'पथिक' सुख पाना।
कभी और किसी द्वार पे न जाना।
भरे प्रभु के भण्डार, धुआंधार लगातार,
चहुँ ओर से आनन्द बरसाएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण..........

प्रभु नाल प्यार

कर लै सच्चे प्रभु दे नाल प्यार बन्देया।
इस ज़िन्दगी नूं ऐंवें न गुज़ार बन्देया।
इस दुनियां दे विच तेरा कौन अपना।
प्रभु अपने दा भुलेया तूं नाम जपना।
अजे वेला ई सोच ते विचार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल.................
तेरे सिर ते खड़ा है बन्दे काल कूकदा।
ओहने करना निशाना अपनी बन्दूक दा।
गोली मौत लंघ जाणी सीने पार बन्देया
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल.................
अग्गे खूह है चौरासी लख मील गैहरा।
विच डिग्गेयां नहीं लभना निशान तेरा।
वेखीं पैर न वधांवीं ख़बरदार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल.................
नहियों दम दा भरोसा मिट्टी दे शरीर नूं।
छड्डु दुनियां दा मेला चलना अख़ीर नूँ।
'पथिक' मुड़ के नहीं औना दूजी वार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल.................

दीवाली और दयानन्द

तर्ज़–तुझ पे कुर्बां मेरी जान, मेरा दिल मेरा ईमान।

शेअर–चले परलोक यात्रा पर दयारे हिन्द के माली।
लिये लाखों दीये आगे खड़ी स्वागत को दीवाली।

कर के दुनियां का उद्धार, जिस दिन छोड़ा था संसार।
कहने वाले कहते हैं था दीवाली का त्यौहार।
दीवाली। दीवाली। दीवाली।
हर साल आती है दीवाली।.....

देह छोड़ निकल पड़े। मुक्ति पथ पर चल पड़े।
अलविदा कहने को देखो दीप लाखों जल पड़े।
ओ-करने को अन्तिम दीदार। आए दीपक बांध कतार।
कहने वाले कहते हैं था दीवाली का त्यौहार।
दीवाली। दीवाली। दीवाली।.....

नींद गहरी सो गया। आसमां में खो गया।
मौत आई थी मगर वह अमर जग में हो गया।
ओ-टूट गए सारे हथियार। हो गई सब चालें बेकार।
कहने वाले कहते हैं था दीवाली का त्यौहार।
दीवाली। दीवाली। दीवाली।.....

वह तो मुक्ति पाएगा। लौट कर नहीं आएगा।
भटकने वालों को फिर भी रास्ता दिखलाएगा।
ओ-सजे 'पथिक' गलियां बाज़ार। हर दरवाज़ा हर दीवार।
कहने वाले कहते हैं था दीवाली का त्यौहार।
दीवाली। दीवाली। दीवाली।.....

अमर शहीद पं० लेखराम

ऋषि दयानन्द के जीवन की, की जिसने ताईद।
और फिर खा कर छुरा पेट में हो गया अमर शहीद।
वह पंडित लेखराम था, वह पंडित लेखराम था।

धर्म की ख़ातिर अर्पण की अपनी भरपूर जवानी।
दे गया जो इस बलि वेदी पर जीवन की कुर्बानी।
काम लेख का बन्द न हो यह की जिसने ताकीद।
वह पंडित लेखराम था वह ....

ऋषि कथा एकत्रित करने भारत भर में घूमा।
जहां ऋषि के चरण पड़े थे उस मिट्टी को चूमा।
लहु से फिर हस्ताक्षर करके दे गया हमें रसीद।
वह पं० लेखराम था वह...................

वैदिक धर्म विरोधी को देता निर्णय दो टूक।
वाणी जिस की ऐटम बम थी और कलम बन्दूक।
पोपों पन्थाईयों की जिसने सदा उड़ाई नींद।
वह पंडित लेखराम था वह.................

बज के रहेगा अब तो चारों ओर वेद का डंका।
निश्चय ही अब हो जाएगी नष्ट पाप की लंका।
'पथिक' यह भारत स्वर्ग बनेगा थी जिसको उम्मीद।
वह पंडित लेखराम था वह.............

कहां लौट जाए

तर्ज़– यशोमती मैय्या से बोले नन्दलाला।

गति जीव आत्मा की कोई समझाए।
कहां से यह आए कहां लौट जाए।
कहां लौट जाए। गति जीव.............

कभी इसका आना जाना किसी ने न जाना।
कहां का निवासी है यह कहां है ठिकाना।
किसी को भी कोई अपना पता न बताए।
कहां लौट जाए। गति जीव............

मिली एक नगरी इस को अयोध्या निराली।
जो है आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली।
सिर्फ़ चार दिन ही इस का बादशाह कहाए।
कहां लौट जाए। गति जीव.........

प्रभु ने हज़ारों तोहफ़े बना कर दिए हैं।
कुदरती नज़ारे जग में इसी के लिए हैं।
इन्हें छोड़ क्यों जाता है समझ में न आए।
कहां लौट जाए। गति जीव..........

'पथिक' यह प्रभु की माया प्रभु जानता है।
प्रभु के सिवा न कोई पहचानता है।
जो महान् शक्ति सारे विश्व को चलाए।
कहां लौट जाए। गति जीव.............

जा नी धीए

तर्ज़–घर बाबुल दा छड्ड के धीए धीयां इक दिन जाना एं।

जा नी धीए अज तूं अपने मापेयां तों दूर नी।
हत्थीं कट्टेया दिल दा टोटा हो बड़ा मजबूर नी।
जा नी धीए अज तूं अपने.............

नाल हंजुआं दे विधाता है लिखी तकदीर तेरी।
बन गया ए घर पराया बच्चिये नी जागीर तेरी।
धीयां इक दिन मापेयां तों विछड़ जाना ज़रूर नी।
जा नी धीए अज तूं अपने.............

धीए नी तेरा विछोड़ा हिक बाबुल दी चीर चल्लेया।
नहरां ते दरियांवां वांगूं अखियां चों अज नीर चल्लेया।
पत्थर ग़म ने शीशा दिल दा कीता चकनाचूर नी।
जा नी धीए अज तूं अपने.............

जाणदा हां दिल तेरे नूं अज लगी ए ठेस बच्चिए।
'पथिक' तैनूं पाल के मैं दे रहयां परदेस बच्चिए।
पर मेरी नहीं पेश जांदी जग दा एह दस्तूर नी।
जा नी धीए अज तूं अपने.............

शराब से तबाही

तर्ज़–कव्वाली

लाखों ही घर शराब ने सुनसान कर दिए हैं।
गुलशन कई उजाड़ कर वीरान कर दिए हैं।
लाखों ही घर शराब ने.............

हर रोज़ इक शराबी जाए शराब पीने।
पैसे न जब मिले तो पत्नी के गहने छीने।
जख़्मी दिले मासूम के अरमान कर दिए हैं।
लाखों ही घर शराब ने.............

बहनों के सामने भी आए न लाज इनको।
दे दे न बद्दुआएं नारी समाज इनको।
शरमो हया शराब पर कुर्बान कर दिए हैं।
लाखों ही घर शराब ने.............

हम क्या बताएं तुमको इतिहास दे गवाही।
हुई इस की ही बदौलत यदुवंश की तबाही।
क्या-क्या हमारी कौम के नुकसान कर दिए हैं।
लाखों ही घर शराब ने.............

यारों ने करम करके दो घूंट गर पिलादी।
बस 'पथिक' ज़िन्दगी तो बिन आग ही जला दी।
समझो तुम्हारी मौत के सामान कर दिए हैं।
लाखों ही घर शराब ने.............

दहेज की बीमारी

तर्ज़–मैं तो स्वामी दयानन्द का बांका वीर सिपाही हूं।

अब दहेज की चली बीमारी और कोई न करे इलाज।
बहुत बड़ी है ज़िम्मेदारी तुम पर महिला आर्य समाज।
बहुत बड़ी है ज़िम्मेदारी.............

कितनी रोज़ दहेज के कारण जलती हैं कन्याएं।
सिमट सिमट कर मिट जाती हैं जीवन की आशाएं।
हाथ पसारें भरें सिसकियां किसी मदद की हैं मुहताज।
बहुत बड़ी है ज़िम्मेदारी.............

पहले बिकती रहीं लड़कियां अब बिकते हैं लड़के।
ज्यों-ज्यों धन की हवा लगे यह त्यों-त्यों अग्नि भड़के।
तुम्हें बग़ावत करनी होगी अपने हाथ उठाकर आज।
बहुत बड़ी है ज़िम्मेदारी.............

घर घर बैठी युवा बेटियां हसरत भरी निगाहें।
निर्धन माता पिता निहारें सूनी सूनी राहें।
कब तक आंसू बरसाएगी बेटी और पिता की लाज।
बहुत बड़ी है ज़िम्मेदारी.............

तुम चाहो तो रुक सकती है पाप ज़ुलम की आंधी।
फिर यह गठड़ी नहीं खुलेगी अब तुमने गर बांधी।
मिलकर उठो बदल के रखदो 'पथिक' ये उलटे रस्मो रिवाज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी.............

मिल कर काम करें

आओ मिल कर काम करें।
आपस के सब द्वेष मिटा कर,
मधुर मिलन अभिराम करें। आओ मिल कर............
पड़े ऋषि के स्वप्न अधूरे।
बोलो कौन करेगा पूरे।
अर्पण करके तन मन धन को,
संकट से संग्राम करें। आओ मिल कर..............
हम सब ऋषिवर के अनुयायी।
वैदिक धर्मी बहिन और भाई।
सारे मिल कर इक हो जाएं,
विश्व विजेता नाम करें। आओ मिल कर..............
पर निन्दा और चुगली छोड़ें।
रगड़ों झगड़ों से मुंह मोड़ें।
मन में सब अच्छे कर्मों का,
चिन्तन आठों याम करें। आओ मिल कर..............
बल बुद्धि और साहस पाएं।
निर्भय अविचल बढ़ते जाएं।
परमेश्वर से यही याचना,
'पथिक' सुबह और शाम करें। आओ मिल कर........

फिर दिवाली आ गई

यह आ गई है आ गई लो फिर दीवाली आ गई।
दिल पर ऋषि की याद फिर बनकर घटा सी छा गई।
जिस दिन हुए संसार में दर्शन ऋषि के आख़री।
सुन लो कथा उस दिन की जो पत्थर को भी पिघला गई।
अजमेर की भूमि थी वह और वक्त था वह शाम का,
इक जोत जब बुझने लगी हर ज़िन्दगी घबरा गई।
अब तक पिये कांचो ज़हर पूरा महीना हो गया,
सारा जिसम ज़ख़्मी हुआ नस नस चुभन तड़पा गई।
अन्दर से जिसकी नाड़ियाँ उस कांच ने थीं काट दीं,
और ज़हर की तासीर भी अपना असर दिखला गई।
वेदों में जितने मन्त्र हैं उतने ही छाले देह पर,
प्यारे ऋषि की यह दशा भक्तों के दिल दहला गई।
सारे बदन में दर्द था दुखता था चाहे रोम रोम,
पर मुस्कुराहट अन्त तक चेहरे का साथ निभा गई।
यह तो वही काया है जो रखती थी ताकत शेर की,
पर अब पड़ी मजबूर है गुल की तरह कुम्हला गई।

उसने कहा जब खोल दो दरवाज़े और सब खिड़कियां,
यह बात ही अब कूच का बस वक्त है समझा गई।
और फिर कहा आकर मेरे पीछे खड़े होवो सभी,
खुद ली समाधी की दशा जो अपूर्व दृश्य बना गई।
मन्त्रों का उच्चारण किया और प्रेम से सन्ध्या करी,
फिर लेटते ही तख़्त पर जिह्वा यह बोल सुना गई।
अच्छी करी लीला प्रभु इच्छा तुम्हारी पूर्ण हो,
यह कह के आंखें मूंद लीं बिजली सी इक लहरा गई।
फिर श्वास खींचा ज़ोर से और तन से बाहर कर दिया,
बस यह हवा जाती हुई परलोक में पहुँचा गई।
लो देखते ही देखते पिंजरे का पंछी उड़ गया,
हर दिल की धड़कन रुक गई हर इक नज़र पथरा गई।
ऐसी लगी इक चोट सी कैसे कहूँ कैसी लगी,
दिल की कली जल कर रही हर आंख जल बरसा गई।
जग से दयानन्द नाम का इक रहनुमा जाता रहा,
यह ख़बर थी सुन कर जिसे सारी ज़मीं थर्रा गई।
रुक जा 'पथिक' लिखते हुए आंखों में आंसू आ गए,
सूखा गला दिल भर गया विरती तेरी चकरा गई।

छत्रपति रणवीर शिवा जी

भारत के नर नार सभी करते हैं गौरव गान।
छत्रपति रणवीर शिवा जी फ़ौलादी इनसान।
यह है माता जीजा बाई की अखियों का तारा।
जिसने वीर कथाएं गा गा मन मस्तिष्क संवारा।
माता का यह लाल बना भारत माता की शान। छत्रपति–
दुश्मन की ताकत के आगे कभी नहीं घबराया।
मुट्ठी भर वीरों को ले कर लाखों से टकराया।
साक्षात् साहस की मूरत पर्बत की चट्टान। छत्रपति–
हमलावर मुग़लों की सेना जब रण में आ धमकी।
शत्रु पर बिजली बनकर तलवार शिवा की चमकी।
तोबा तोबा बोल उठा हर मुग़ल पकड़ कर कान। छत्रपति–
शाइस्ता खां कपट वेश में इन्हें मारने आया।
बुद्धिमत्ता से उस को ही नरक धाम पहुँचाया।
रणनीति मे कुशल समय पर चाल गए पहचान। छत्रपति–
धोखा दे औरंगज़ेब ने शेर जेल में डाला।
धूल झोंक सब की आंखों में निकल गया मतवाला।
मुग़ल सल्तनत मुंह मे उंगली डाल हुई हैरान। छत्रपति–
हर पर्बत का हर पत्थर कहता है अमर कहानी।
गूंज रहा है नाम गगन में वीर शिवा बलिदानी।
'पथिक' हमेशा याद करेगी वीरों की सन्तान। छत्रपति–

मन्ज़िल तेरी दूर

मन्ज़िल तेरी दूर मुसाफ़िर मन्ज़िल तेरी दूर।
टुक राहों पर डाल निगाहें।
ऊबड़ खाबड़ टेढ़ी राहें।
कांटों से भरपूर मुसाफ़िर मन्ज़िल तेरी दूर।
मन्ज़िल तेरी दूर................
बैठ किनारे क्यों रोता है।
घबराने से क्या होता है।
कर चलना मन्ज़ूर मुसाफ़िर मन्ज़िल तेरी दूर।
मन्ज़िल तेरी दूर................
चाहे कितने संकट आएं।
पांव न तेरे रुकने पाएं।
थक कर होवें चूर मुसाफ़िर मन्ज़िल तेरी दूर।
मन्ज़िल तेरी दूर................
मन की कली तो खिल के रहेगी।
इक दिन तुझको मिल के रहेगी।
मन्ज़िल 'पथिक' ज़रूर मुसाफ़िर मन्ज़िल तेरी दूर।
मन्ज़िल तेरी दूर................

भगवान् के द्वारे भक्त

तर्ज़—करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं स्वीकार करो मां।

भगवान तुम्हारे दर पे भक्त आन खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान खड़े हैं।
ओ मालिक मेरे ! ओ मालिक मेरे..........

संसार से निराले कलाकार तुम्हीं हो।
सब जीव जन्तुओं के सृजनहार तुम्हीं हो।
तुझ परम प्रभु का मन में लिए ध्यान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान.....ओ मालिक मेरे..

तुम वेद ज्ञान दाता पिताओं के पिता हो।
वह राज़ कौनसा है कि जो आपसे छिपा हो।
हम तो हैं अनाड़ी बालक बिना ज्ञान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान....ओ मालिक मेरे.....

सुनकर विनय हमारी स्वीकार करोगे।
मंझधार में है नैया प्रभो पार करोगे।
हर कदम कदम पर आगे ये तूफ़ान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान.....ओ मालिक मेरे.........

दुनियां में आप जैसा कहीं और नहीं है।
इस ठौर के बराबर कहीं ठौर नहीं है।
अपनी तो 'पथिक' मन्ज़िल है जो पहचान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान........ ओ मालिक मेरे.........

ऋषि गुण गान

तर्ज़–कीमा मलकी (पंजाबी लोक गीत)

कईयां सदियां तों सी देश ते गुलामी,
भैड़ा हाल जिन्हें देश दा बनाया।
गोरी चमड़ी वाले चोर ते लुटेरे,
लुट्टी जांदे मेरे देश दा सरमाया।
औखा हो गया सी एह पछान लैनां,
अपना कौन है ते कौन है पराया।
सूरज डुब गया सी उच्ची शान वाला,
उच्चा मस्तक सी हिमालय ने झुकाया।
रातां चानणियां नूं खा गया हनेरा,
बद्दल कैहर दा सी हिन्द उत्ते छाया।
दिने दुपहरीं एथे पै गईयां तरकालां,
उलटा चक्कर सी तकदीर ने चलाया।
तैथों सदके वेदां वालेया फ़कीरा,
सुत्ती कौम नूं तूं आन के जगाया।
आँदे मुड़के एहदे होश तूं ठिकाणे,
अपनी हस्ती दा एहसास तूं कराया।
लाहया कन्धां ते शहतीरां नालों जाला,
कीता वहमां ते पाखण्डां दा सफ़ाया।
सारे वेहड़े अन्दर ऐसी बौकर फेरी,
कूड़ा कर्कट सारा हूँज बन्ने लाया।
ओ ऋषिया ! कूड़ा कर्कट सारा....

विद्या तर्क बुद्धि हिम्मत ते सच्चाई,
लै के आयों तूं भगवान दियां दातां।
योगी बनके सच्चे शिव दी खोज कीती,
डाहडी मौत नूँ वी दे गयों तूं मातां।
जूहां जंगल बियाबानां अन्दर कट्टे,
औखे दिन तूफ़ानी कैहर दियां रातां।
तेरी कुन्दन वरगी काया उत्ते पईयां,
सरदी गरमी ठण्डों धुयां ते बरसातां।
अपनी मन्ज़िल वलों पैर न हटाया,
कीता किन्ना ही मजबूर सी हालातां।
सारी दुनियां अन्दर योगी कल्लमकल्ला,
न कोई टिल्ला न ही जोड़ियां जमातां।
लगी अठारां अठारां घण्टे दी समाधी,
होइयां मालिक दे नाल रोज़ मुलाकातां।
रबी वाणी दा प्रचार ऐसा कीता,
मिलियां निघरेयां ते मोयां नूँ हयातां।
तेरे मिट्ठे मिट्ठे बोल सुच्चे मोती,
साडे वासते ने सोहणियां सुगातां।
जिथे होणगे सियाणे चार इकट्ठे,
ओथे पैणगियां तेरियां ही बातां।
ओ ऋषिया! ओथे पैणगियां तेरियां ही बातां।

मानसरोवर दा तूं हंस बन के आयों,
रौला पाया बगले भगतां कालेयां कांवां।
जिन्हां इट्टां रोड़े मारे ज़हर पिलाया,
ओहनां लोकां दा कीह हाल मैं सुनांवां।
एह तां टिमटिमांदे दीवे ते टटैणे,
तेरे मथे बझा सूरज दा सरनांवां।
रेगस्तानां अन्दर वगदे नहियों झरने,
न ही लभन ओथे बोहड़ां दियां छांवां।
वैदिक शिक्षा वाला दौर तूँ चलाया,
आइयां पच्छम वलों मोड़ियां हवांवां।
फिर गुलामी दियां तोड़ के ज़ंजीरां,
भारत माता उत्तों टालियां बलांवां।
ओहनां विछड़ेयां नूँ सीने दे नाल लाया,
नेड़े हुन्दा नहीं सी जिन्हां दा परछांवां।
नारी जाति नूँ तूं सारे हक दुआये,
बैठन पईयां राजगद्दी ते महिलांवां।
मिलदे वन्नसवन्ने पत्थर ते बथेरे,
अरबां ख़रबां विचों लाल कोई टांवां।
तेरे वरगे जीन जोगे पुत्तर हीरे,
एथे जम्मदियां नहीं रोज़ रोज़ मांवां।
ओ ऋषिया! एथे जम्मदियां नहीं रोज़ रोज़ मांवां।

बनके आयों मेरे देश दा तूं माली,

पाईयां प्यार दियां ऐसियां फुहारां।

चारे पासे नच्चन लग पई हरयाली,

बागां उज्जड़ेयां च आईयां फिर बहारां।

आपे घट्टा मिट्टी धूड़ सिर पुआई,

हसके सहियां तूं मुसीबतां हज़ारां।

फुल्लां कलियां नूं तूं दित्ते गीत हासे,

अपनी झोली तूं ते भर लई नाल ख़ारां।

आके मस्ती अन्दर भौंरे गावन लग्गे,

कोयलां तोते चिड़ियां डारां दियां डारां।

गिद्दड़ मुहें लोकी शेरां वांगूं गज्जे,

ऐसा जादू कीता तेरियां ललकारां

फड़के फ़ेर एहनां गभरुआं दे डौले,

उच्ची धौन करके उठ पईयां मुटियारां।

मुड़ के आ गई पीले चेहरेयां ते लाली,

गईयां रौणकां ने मोड़ियां मुहारां।

मेरा रोम रोम तेरा ए कर्ज़ाई,

तेरा कर्ज़ा केहड़े हाल मैं उतारां।

नीली छतरी वाला 'पथिक' दए तफ़ीकां,

लक्खां जिन्दड़ियां मैं तेरे उत्तों वारां।

ओ ऋषिया ! लक्खां जिन्दड़ियां मैं

ईश प्रार्थना

हे ईश्वर हे जगत पिता हम सब तेरे गुण गाएं।
मन मन्दिर में सदा तुम्हारे नाम की जोत जलाएं।
हे ईश्वर हे जगत पिता...........

नाथ कृपा हम सब पर करना हम बालक हैं तेरे।
करो उजाला सब के मन में करके दूर अन्धेरे।
ज्ञान की आंखें हम को दे दो मन्ज़िल अपनी पाएं।
हे ईश्वर हे जगत पिता...........

जग के पालनहार प्रभु हम आए शरण तिहारी।
दुखियों के दुख हरने वाले सुन लो टेर हमारी।
दे दाता वरदान हमें जग में शुभ कर्म कमाएं।
हे ईश्वर हे जगत पिता...........

सत्य कथन की शक्ति दे दो झूठ कभी न बोलें।
हर प्राणी से न्याय करें और सदा बराबर तोलें।
जो हम औरों से चाहें वह खुद करके दिखलाएं।
हे ईश्वर हे जगत पिता...........

यही कमना सबके मन की भगवन् कर दो पूरी।
जन्म सफल करने की आशा रह न जाये अधूरी।
'पथिक' तुम्हारे चरणों में हम अपना शीश झुकाएं।
हे ईश्वर हे जगत पिता...........

पन्द्रह अगस्त

तर्ज़–बाबुल कौन घड़ी यह आई

पन्द्रह अगस्त का वह दिन आया।
जब यह तिरंगा लाल किले पर
भारत ने लहराया। पन्द्रह अगस्त का..........
मुद्दत से हम जूझ रहे थे।
पानी बन कर ख़ून बहे थे।
है यह मुबारिक दिन हमने जब
मेहनत का फल पाया। पन्द्रह अगस्त का..........
जुल्मो सितम के बोझ उठाए।
जेलें काटीं प्राण गंवाए।
तोड़ के रख दीं सब ज़ंजीरें
देश आज़ाद कराया। पन्द्रह अगस्त का..........
जब अंग्रेज़ ने सब सुख छीना।
मुश्किल कर दिया जिसने जीना।
आज के दिन ही उस दुश्मन का
मिल तख़्ता पलटाया। पन्द्रह अगस्त का..........
सन् सत्तावन में बिगुल बजा था।
एक मुसाफ़िर पथ पे चला था।
'पथिक' वह मन्ज़िल सैन्तालिस की
पन्द्रह अगस्त को पाया। पन्द्रह अगस्त का..........

ओम् नाम जप लै

तर्ज़–तेरा रूप बद्दलां दा परछावां।

जे तूं जग ते सदा सुख पाना जिन्दे नी ओम् नाम जप लै।
तैनूं मुड़के पवे न पछताना जिन्दे नी ओम् नाम जप लै।
अनगिन जीव लक्खां योनियां च पए ने।
कीते करमां दा सब फल भोग रहे ने।
पुट अखियां ते वेख ज़माना जिन्दे नी ओम् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना...........
प्रभु दी कचैहरी विच चलदा लिहाज़ नहीं।
ओथे कामयाब हुन्दा कोई चालबाज़ नहीं।
पैंदा सब नूं हिसाब चुकाना जिन्दे नी ओम् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना...........
जग है बाग़ीचा उस शाहे लाजवाब दा।
आदमी बाग़ीचे विच फुल है गुलाब दा।
अज खिड़ेया ते कल मुरझाना जिन्दे नी ओम् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना...........
अज तेरे वस कल वस पैना काल दे।
तेरी मरज़ी ए भावें मन्न भावें टाल दे।
मेरा कम है 'पथिक' समझाना जिन्दे नी ओम् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना...........

भगवान का दर

तर्ज़–हज़ारों रंग बदलेगा ज़माना

शेयर– मत सोच बांवरे कि बेकार इस दर पे आए।
जो भी आए रे इस दर पर वो ख़ाली न जाए।

जो है भगवान के दर का सवाली।
यहां से वो कभी जाए न ख़ाली।

यहां आकर सभी वरदान पाएं।
यहां दुःख दर्द सारे छूट जाएं।
कि खुशहाली से मिट जाए कंगाली।
जो है भगवान के दर का सवाली..

मन वचन कर्म से इक हो के आए।
उसे भगवान झोली भर लौटाए।
वही दाता है त्रिलोकी का वाली।
जो है भगवान के दर का सवाली..

है ख़बर उसको जो है मन में तेरे।
करेगा दूर वह ग़म के अन्धेरे।
'पथिक' भगवान की महिमा निराली।
जो है भगवान के दर का सवाली..

कमाई कर लो

तर्ज़–दे दी हमें आज़ादी बिना खड़ग बिना ढाल।

ऐसी कमाई कर लो कि जो संग जा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में कुछ काम आ सके।
ऐसी कमाई कर लो कि..........

संसार में आता कोई साथी नज़र नहीं।
बस नाम के साथी हैं ये साथी मगर नहीं।
साथी बनाओ उसको जो साथी कहा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में...........

पापों में सदा मन को लगाते चले गए।
बदियों का ही सामान बढ़ाते चले गए।
लेकिन कभी न धर्म को अपना बना सके।
मुश्किल पड़े तो राह में...........

दुनियां की चकाचौंध में जीवन बिता दिया।
अनमोल समय पा के भी यों ही गंवा दिया।
मानव वही है इसका जो फ़ायदा उठा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में...........

चिन्ता की नहीं बात जो चिन्तन से काम लो।
शुभ कर्म करो अब से ही ईश्वर का नाम लो।
सम्भव है 'पथिक' आप के बन्धन छुड़ा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में...........

मांस खावन वालेयो

भेड्डआं ते बकरेयां दा मांस खावन वालेयो।
मार के चिड़ियां कबूतर चस्के लावन वालेयो।
मछलियां डड्डियां वग़ैरा निगल जावन वालेयो।
ख़त्म कर ज़िन्दगानियां ज़िन्दा कहावन वालेयो।
जलचरां नूं थलचरां नूं नभचरां नूं खा लया।
बेज़बानां दे लहु नाल क्यों ज़बानां नहा लया।
पानी दे जीवां चों बस किश्ती बचाई रह गई।
चार पैरां वालेयां चों चारपाई रह गई।
रह गई आकाश ते गुड्डी चढ़ाई रह गई।
शुकर है एह रह गए समझो खुदाई रह गई।
मांस दे खादे बिनां जिस पेट नूं न सबर है।
पेट काहदा पेट है ओह टुरदी फिरदी कबर है।
जिसम दी ताकत वधावे मीट बिल्कुल झूठ है।
सूरमा जग ते बनावे मीट बिलकुल झूठ है।
खान दे विच स्वाद आवे मीट बिलकुल झूठ है।
जे कहवो जीना सिखावे मीट बिलकुल झूठ है।
एहनां विचों शर्तिया एहदे च गुण कोई नहीं।
न कदे होया न होवेगा ते हुण कोई नहीं।
हो गया बलवान हाथी मीट ते खांदा नहीं।
घियो मसाले दे बिनां ते स्वाद वी आंदा नहीं।

मीट खा के कोई बुज़दिल वीर बण जांदा नहीं।
ज़िंदा सिखावे ज़िंदगी मुरदा ते सिखलांदा नहीं।
होया दागी कोट जे कतरा लहू दा पै गया।
खा के लहू ते बोटियां मन साफ़ किद्दां रह गया।
अपनी ममता दी कदे आज़मायश करके वेख लौ।
सर्वशक्तिमान तों इक बार डर के वेख लौ।
आप अपने कालजे दा रुग्ग भर के वेख लौ।
लख़ते जिगर दी धौण ते तलवार धर के वेख लौ।
सोच लौ अपना पुत्तर उस जीव दा उत्तर नहीं।
कीह किसे मां बाप दा दुनियां ते ओह पुत्तर नहीं।
जिस तरह सम्भाल के रखदे ओ अपने बाल नूं।
कैंहदे ओ लग्गे न तत्ती वा कदे इस लाल नूं।
खाओ न बच्चा किसे दा छड्डो भैड़ी चाल नूं।
समझो अपने हाल वरगा दूसरे दे हाल नूं।
नर पशु पक्षी दा जद भगवान सिरजनहार है।
तां ते जग ते जीन दा एहनां नूं वी अधिकार है।
शक्तिवर्धक असल विच मक्खन है घियो है दूध है।
अन्न मेवे सब्ज़ियां फल संतरा अमरूद है।
कैहण जेहड़े मांस विच शक्ति एह गल्ल बेसूद है।
मांस नालों छोलेयां विच शक्ति वध मौजूद है।
जे ते तूं एं आदमी फिर मांस खाना फ़र्ज़ नहीं।
जे तूं एं कोई राक्षस फिर 'पथिक' कोई हर्ज़ नहीं।

राष्ट्रीय पहेलियां।

तर्ज़–ईचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना।

सुनते जाना सुनते जाना देश प्यार का गाना सुनते जाना।
एक पहेली तुम से पूछूँ समझ सोच बतलाना सुनते जाना।

1. बांध लंगोटी हाथ में सोटी इक महात्मा आए थे।
अहिंसा और सच्चाई को वे साथ ही अपने लाए थे।
ओ ! छुआ छूत को दूर किया हर एक बराबर जाना सुनते जाना।
बोलो कौन ?......................महात्मा गांधी।

2. एक पुरुष का नाम बताओ चाचा जी कहलाते थे।
आस पास सब देशों में वे शान्ति पाठ पढ़ाते थे।
ओ ! पहनते थे वे सर पर टोपी जाने कुल ज़माना सुनते जाना।
बोलो कौन ?................... जवाहर लाल नेहरू।

3. बंगाली इक नेता हिन्द आज़ाद कराना चाहते थे।
अंग्रेज़ों को वे तो नाकों चने चबाना चाहते थे।
ओ ! पता नहीं वह कहां गया है आज तलक न जाना सुनते जाना।
बोलो कौन ?.....................सुभाष चन्द्र बोस ।

4. लाज बचाने भारत की लाला जी आन पधारे थे।
पत रखी भारत वाली पंजाब केसरी प्यारे थे।
ओ ! खाईं लाठियां अंग्रेज़ों से मस्त हुआ दीवाना सुनते जाना।
बोलो कौन.....................लाला लाजपत राय।

5. भारत का इक नौजवान जो देश भक्त कहलाता था।
बम फेंका असँबली हाल में देश जगाना चाहता था।
ओ ! फांसी चढ़ गया भक्त देश का शमां पे ज्यों परवाना। सुनते–
बोलो कौन ?......................शहीद भगत सिंह।

6. एक हाथ पिस्तौल पे दूजा हाथ मूंछ पर रहता था।
पुलिस मुझे न पकड़ सकेगी गरज गरज कर कहता था।
ख़ुद अपने पिस्तौल की गोली खा के अमर हो जाना सुनते जाना।
बोलो कौन ?......................चन्द्रशेखर आज़ाद।

7. अण्डेमान की जेल के अन्दर वीर ने कष्ट उठाए थे।
बार बार कोहलु में जुत कर पीठ पे कोड़े खाए थे।
फिर समुद्र में कूद गया पर हार कभी न माना सुनते जाना।
बोलो कौन ?......................वीर सावरकर।

8. जलेयां वाले बाग का बदला वीर ने अपने हाथ लिया।
लंडन में जा कर गोली से ओडायर को मार दिया।
"पथिक" सभा में खड़ा हो गया मैं ने किया निशाना सुनते जाना।
बोलो कोन ? ....ऊधम सिंह।

झुल्ल वे तिरंगेया

तर्ज़–जग देया चानणां तूं मुख न छुपा वे।

झुल वे तिरंगेया मैं वारी तैथों जां वे।
दुनियां दे विच तेरा गूंजे पया नां वे।
दित्तियां भरांवां दियां भैणां कुर्बानियां।
तींवियां सुहाग ते जवानां ने जवानियां।
तेरे उत्तों पुत्त वारे भागां वाली मां वे।
झुल वे तिरंगेया..........
फुल्लां जहियां जिन्दड़ियां सूलियां ते टंगियां।
रंगियां पोशाकां साडी रत्त च फ़िरंगियां।
मत्थे तों ग़ुलामी वाला टिक्का लथा तां वे।
झुल वे तिरंगेया..........
रावी कंढे नेहरू तैनूं मोढेयां ते चुक्केया।
दम दम ओहदा तेरी सेवा विच मुक्केया।
दिलां दे वी दिलां च बनाया जिन्हें थां वे।
झुल वे तिरंगेया..........
गगनां दे विच तूं हमेशा रहवें झुल्लदा।
हिन्द तेरे साए हेठां वधदा ते फुल्लदा।
माणिएं 'पथिक' तेरी जुगां तोड़ी छां वे।
झुल्ल वे तिरंगेया..........

जवानियाँ दा मुल्ल

तर्ज़– नी वतनां दे कम आ गया हो के जंग च शहीद सिपाही।

जवानों मेरे देश देओ हुण मुल्ल जे जवानियां दा पैना।
कि पै गईयां ने लोड़ां देश नू अज एहदियां सरहदां सद लैना।
जवानों मेरे देश देओ..........

वैरियां ने कीते छानणी एहनां पर्बतां दे पत्थरां दे सीने।
खून नाल चिट्टी बर्फ नूं वैरी रंगदे पये ने कमीने।
लोहे दियां हिक्कां तान के उठो रोक लौ विदेशियां दी सैना।
जवानों मेरे देश देओ..........

जिन्द नालों प्यारे हिन्द ते कीता हमला किसे अभिमानी।
मार मारो ऐसी एस नूं करे मुड़के कदे न शैतानी।
तूफ़ाना नाल खैहन मक्ख्यिां वट्टे भांबड़ां नूं घूरियां टटैना
जवानों मेरे देश देओ..........

देणगियां पुत्त लाडले हस हस के वतन दियां मांवां।
वार देणगियां तींविंयां अज अपने सिरां दियां छांवां।
ते वीरां हत्थीं गाने बन्न के विच जंग दे घलणगियां भैणां।
जवानों मेरे देश देओ..........

वतनां दी राखी वास्ते मर मिटने दी करलौ तैयारी।
'पथिक' है जीना ओसदा जिन्हें जिन्द वतनां तो वारी।
कि मिट गया जो वतनां लई ओहदा नां दुनियां देविच रहना।
जवानों मेरे देश देओ..........

वतन के दीवाने

तर्ज़–आंखों मे तुम्हारे जलवे हैं होटों पे तुम्हारे अफ़साने

कुर्बान वतन पर जानो जिगर करते हैं वतन के दीवाने।
हम भारत के हैं नूरे नज़र अनजान ज़माना क्या जाने।
हमारी ज़िन्दगानी है वतन अपने की राहों में।
बहादुर बन के रहते हैं ज़माने की निगाहों में।
है ठण्डक भी हमारे सीने में मचलती आग भी दिल में।
शिवा प्रताप का यह ख़ून बहता है इन बाहों में।
मैदां में अगर हम डट जाएं। मुश्किल है कि पीछे हट जाएं।
तूफ़ान जिधर भी बढ़ जाएं ख़ुद झुक जाती हैं चट्टानें।
कुर्बान वतन पर जानो ज़िगर..........

पहाड़ों से जो टकराएं वो माथे फूट जाते हैं।
जो सोये शेर को छेड़ें वो मौत अपनी बुलाते हैं।
हमारा घर जो लूटना चाहें वो पहले सोच लें इतना।
कि दुश्मन को सदा नाकों चने लोहे के हम चबवाते हैं।
जो खेल करें शमशीरों का, यह देश है बांके वीरों का।
जो शम्मे वतन पर जल जाएं हम ही हैं 'पथिक' वो परवाने।
कुर्बान वतन पर जानो जिगर..........

तिरंगा

तर्ज़–दुनियां में हम आए हैं तो जीना ही पड़ेगा।

झंडा यह तिरंगा है हमें जान से प्यारा।
मंज़िल है शहीदों की यह भारत का दुलारा।
सच्चाई अहिंसा की पकड़ हाथ में सोटी।
झंडे को किया ऊंचा पहन तन पे लंगोटी।
बापु का यही प्राण यही आंख का तारा। झंडा यह तिरंगा....
रावी के किनारे पे था नेहरू ने उठाया।
तन मन इसे सौंपा और सीने से लगाया।
मुख से वह लगाकर चले आज़ादी का नारा। झंडा यह तिरंगा...
नेता जी के जब ख़ून ने खाया था उबाला।
आज़ाद हिन्द फ़ौज को खुद आप सम्भाला।
झंडे को लिया हाथ में दुश्मन को पुकारा। झंडा यह तिरंगा......
सरदार भगत सिंह ने थी दी इसको सलामी।
मिट जाएंगे पर दूर तो कर देंगे गुलामी।
फांसी पे चढ़ा देश भगत देश का प्यारा। झंडा यह तिरंगा..
झंडे की दिलो जान से हम रक्षा करेंगे।
कुर्बान 'पथिक' होंगे न दुश्मन से डरेंगे।
दरिया की तरह चाहे बहे ख़ून हमारा। झंडा यह तिरंगा......

शहीदां नू प्रणाम

मेरा लख लख है प्रणाम अमर शहीदां नूं।
याद करिए सुबह ते शाम अमर शहीदां नूं।
हस हस खेडियां ने ख़ून दियां होलियां।
सीनेयां ते खादियां ने गोलियां ते गोलियां।
दित्ते मौत ज़िन्दगी दे जाम अमर शहीदां नूं।
मेरा लख लख है प्रणाम......
गल पाके बंब झुग्गा वैरियां दा साड़ेया।
ज़िन्दगी दी चण्ड मार वैरी नूं पछाड़ेया
शूरवीरता दा मिलेया इनाम अमर शहीदां नूं।
मेरा लख लख है प्रणाम......
वैरी देयां अठां अठां टैंका नूं तोड़ेया।
जंग विच फेर जिन्द जान नूं विछोड़ेया।
प्रभु चरणां च मिले विश्राम अमर शहीदां नूं।
मेरा लख लख है प्रणाम......
जनता दे हिस्से कुझ आईयां ने शहीदिया।
घर बैठे बैठे जिन्हां पाईयां ने शहीदियां।
मिले दिलां विच 'पथिक' कयाम अमर शहीदां नूं।
मेरा लख लख है प्रणाम......

देश दे जवाना

तर्ज़–सतगुरु नानक तेरी लीला न्यारी ए।

हिन्दुस्तानी बांके वीर जवाना ओए।
मन्न गया ए तैनुं कुल ज़माना ओए।
विच जंग दे ऐसे हथ वखाए नी।
वैरी दे कन्नां नूं हथ लुआए नी।
जान बचाऊ लभदा फिरे बहाना ओए।
मन्न गया ए तैनूं कुल ज़माना ओए।
सैबर जैट जहाज़ शूकदे आए सी।
पर तूं वांगु चिड़ियां दे फड़काए सी।
गया न तेरा ख़ाली कोई निशाना ओए।
मन्न गया ए तैनूं कुल ज़माना ओए।
पैटन टैंक बदामां वांगु भन्ने तूं।
पैरां हेठ लताड़े फन्ने फन्ने तूं।
वैरी चुन चुन मारे विच मैदानां ओए।
मन्न गया ए तैनूं कुल ज़माना ओए।
देश दी ख़ातिर अपना ख़ून बहाया ई।
जान दी बाज़ी ला के हिन्द बचाया ई।
'पथिक' शमां आज़ादी तूं परवाना ओए।
मन्न गया ए तैनूं कुल ज़माना ओए।

हम हिन्दुस्तानी

हिन्दुस्तानी हम हमारा देश हिन्दुस्तान।
देश की ख़ातिर हंसते हंसते हो जाएं कुर्बान।
हिन्दुस्तानी हम हमारा......

जान से प्यारा हिन्द हमारा दुनियां से है न्यारा।
सौंप दिया है हमने इसकी ख़ातिर जीवन सारा।
यही हमारी आन हमारी बान हमारी शान।
हिन्दुस्तानी हम हमारा......

देश की ख़ातिर मरने वाले हम इसके रखवाले।
अमृत कर के पी जाएं हम भारत मां के छाले।
प्राण करे न्यौछावर इस पे भारत की सन्तान।
हिन्दुस्तानी हम हमारा......

कदम कदम पर बढ़ते जाएं गाएं यही तराना।
हर शत्रु से टक्कर लें यह जाने कुल ज़माना।
दुनियां में हम से टकराना काम नहीं आसान।
हिन्दुस्तानी हम हमारा......

पत्थर को पिघला के रख दें हम हैं ऐसे शोले।
फ़ौलादी हैं सीने अपने हम अग्नि के गोले।
झांक रहे हैं 'पथिक' हमारी मुट्ठी में तूफ़ान।
हिन्दुस्तानी हम हमारा......

शहीदों का सन्देश

तर्ज़—चौदहवीं का चांद हो या आफ़ताब हो।

आख़री सन्देश है हर नौजवान को।
रखना लहु से सींच के तुम गुलिस्तान को।

1. प्यारे वतन के वास्ते प्यारी जवानियां।
लाती हैं रंग शहीदों की लम्बी कहानियां।
मिटने न देना देश की तुम आन बान को।
आखरी सन्देश है हर......

2. झुकते हैं खुद पंहाड़ भी हिम्मत के सामने।
सागर भी दिल को बैठ के लगता है थामने।
कह दो भुजा उठा के ज़रा इस जहान को।
आख़री सन्देश है हर......

3. राहों में चाहे लाख हों कांटों की महफ़िलें।
कब्ज़े में दुश्मनों के भी चाहे हों मंज़िलें।
बढ़ जाना 'पथिक' चीर के तुम हर तूफ़ान को।
आख़री सन्देश है हर......

हिन्द दे जवान नूं

तर्ज़– जग देया चानणां तूं मुख न छुपा वे

हिन्द दे जवानां तूं दलेरियां वखाई जा।
जेहड़ा आवे साहमने भंबीरियां भुंआई जा।
हिन्द दे जवानां तूं......

डुल पया ख़ून जदों हिन्द दी सरहद ते।
निगाह जम्मी दुनियां दी लम्मे चौड़े कद ते।
उंगलां ज़माने दियां मुहां च पवाई जा।
हिन्द दे जवानां तूं......

अमनां दा राखा एं तूं जग सारा जानदा।
ढंग वी है याद तैनूं वैरी नूं भजान दा।
नक्क नाल वैरी तों लकीरां तूं कढाई जा।
हिन्द दे जवानां तूं......

बोल दित्ता हल्ला मेरे देश ते दरिन्देयाँ।
ठुंगेया अंगूरां नूं आ जंगली परिन्देयाँ।
फड़ फड़ गिच्चियाँ ते चुँजाँ नूं घसाई जा।
हिन्द दे जवानाँ तूं......

औन दे मुकाबले ते जेहड़ा अज औंदा ए।
ज़ोर जे जवानियाँ दा वेखना ही चौंहदा ए।
सुट के ज़मीन उत्ते दब गोडा वाही जा।
हिन्द दे जवानाँ तूं......

शहीद हुए हैं चिता जले

तर्ज़–अजब है मालिक तेरा जहां चिराग़ कहां रोशनी कहां।

वतन के सेवक चले चले।
शहीद हुए हैं चिता जले।
रात भी ग़म से नहीं ढले।
शहीद हुए हैं चिता जले।
निकलें अरमां शोले बन कर इन वीरों के दिल के।
एक चिता में बैठ चले हैं तीनों साथी मिल के।
अमर हुए आकाश तले।
शहीद हुए हैं चिता जले।
वतन के सेवक चले चले......
ख़ून से मिलकर ख़ून बनेगा सतलुज का यह पानी।
बादल बन कर बरस पड़ेगी दुनियां में यह कहानी।
सारी ख़ुदाई यह देख ले।
शहीद हुए हैं चिता जले।
वतन के सेवक चले चले......
भारत के ये राज दुलारे और अखियों के तारे।
'पथिक' बंधेगा सेहरा इन को आज़ादी के द्वारे।
जय मालाएं इन के गले।
शहीद हुए हैं चिता जले।
वतन के सेवक चले चले......

बड़ियां सिफतां

मालिका बड़ियां ने सिफ़तां तेरियां,
जो किसे ने आन तैथों मंगेया।
पूरियां कर के मुरादां सारियां,
ओहनूं ओसे रंग दे विच रंगेया।
मालिका बड़ियां ने......

नाथ तेरी लीला अपरम्पार है,
कौन तेरियां कुदरतां नूं जाणदा।
होवे जिस ते मेहर तेरी दातेया,
कौडियां चों लाल मोती छाणदा।
मालिका बड़ियां ने......

तेरी शक्ति नाल गुंगे बोलदे,
लूहले लंगड़े पर्बतां नूं लंघदे।
भुज्जे दाणे कल्लरां विच उग्गदे,
इको बारिश मेहर वाली मंगदे।
मालिका बड़ियां ने......

सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान हैं,
सारे जग दा आप सिरजनहार तूं।
ओस नूं फिर क़ीह तूफ़ानां डोबनां,
जे 'पथिक' डुबदे नूं लावें पार तूं।
मालिका बड़ियां ने......

जित्थे कित्थे वैरियां ने धोणां हैन चुक्कियां।
वट्ट लै कचीचियाँ ते मार मार मुक्कियां।
कढ कढ दन्द सारे हत्थां च फड़ाई जा।
हिन्द दे जवानां तू......

जैट हवाई जहाज़ नहियों खण्ड दे खडौणे ने।
पैटन टैंक काहदे ऐंवें घड़ी दे परौहणे ने।
भन्न परां केक नूं ते चाह नाल खाई जा।
हिन्दं दे जवानां तूं......

रोंदा ए ते रोवे कोई रोना कशमीर दा।
दई जा जवाब ओहदी हर तकरीर दा।
इक तैनूं आखे अग्गों पन्दरां सुनाई जा।
हिन्द दे जवानां तूं......

अज असमानां उत्ते झक्खड़ां दा ज़ोर ए।
हिन्द है पतंग एहदी तेरे हथ डोर ए।
'पथिक' आकाशां विच उतांह नूं चढ़ाई जा।
हिन्द दे जवानां तूं......

ग़रीबों की पुकार

तर्ज़–है बहारे बाग़े दुनियां चन्द रोज़।

हम ग़रीबों का नज़ारा देख ले देख ले।
हाल परमेश्वर हमारा देख ले देख ले।
हम ग़रीबों का नज़ारा......

देख कर मैंहगाई के हालात को।
चैन न दिन को मिले न रात को।
क्या सुनाएं रोएं किस किस बात को।
डूबा किस्मत का सितारा देख ले देख ले।
हम ग़रीबों का नज़ारा......

पेट में रोटी नहीं मुख पर ख़ुशी।
हर तरफ़ मजबूरियां और बेकसी।
आज उलझन बन गई है ज़िन्दगी।
कैसे चलता है गुज़ारा देख ले देख ले।
हम ग़रीबों का नज़ारा......

हैं ज़बां पर लफ़ज तेरी याद के।
आंख में आंसु भी हैं फ़रयाद के।
मुस्तहक हैं सब तेरी इमदाद के।
'पथिक' हाथों को पसारा देख ले देख ले।
हम ग़रीबों का नज़ारा......

आर्य वीर दल

बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल।
सत्यमार्ग पर चलो रुके न एक पल।
प्रेम का संचार परस्पर सदा रहे।
द्वेष भाव लेश मात्र भी जुदा रहे।
मन रहे पवित्र कि जैसे हो गंगा जल।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल....
सेवा भाव मन में सर्वदा निष्काम हो।
धर्म कर्म में न कभी भी विराम हो।
हो पहाड़ की तरह निश्चय सदा अटल।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल....
राह में हज़ार मुश्किलें भी आएंगी।
विकट रूप धार कर तुम्हें डराएंगी।
चीर कर मुसीबतों को जाओ तुम निकल।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल....
ईश की दया सदा तुम्हारे साथ है।
पीठ पर तुम्हारी महर्षि का हाथ है।
भक्ति भाव से 'पथिक' जन्म करो सफल।
बढ़ता चल बढ़ता चल आर्य वीर दल....